part - III, Selections from the Bhojpuri Dialect
Conversations, fables, Bhojpuri Songs

Conversation

from G.A. Grierson, Seven Grammars of the Dialects and subdialects of Bihari language (Calcutta, 1884)

The following selections are in the Bhojpuri dialect of Sáran. They were translated for me by Bisesar Parśád of Dahiáw, in that district. A translation will be found in the General Introduction. part - II

Conversation Between Two Villagers

१ प्र. कह० भाई, कहन्चाँ सेँआवेल०?
उ. परोसे का गाँव सेँ आवत बानी ।
२ प्र. आहिजा सेँ कब चलल रहीँ ?
उ. सँबकेरे के चलल हवीँ ।
३ प्र. काहे खातिर उहआँ गइल रह०लीँ हाँ ?
उ. उह०वाँ हमार खेत बाटे, ऊहे देखे गइल रह०लीँ हाँ ।
४ प्र. ओह में का बोअल बा ?
उ. खाली रहर बोअल बाटे ।
५ प्र. कह० भाई, अब०की जजाद के कइसल रङ्ग बा?
उ. एह फरिल के का हाल पुछ०ले बाड़०; बर०खा बिना अनेर हो गइल ।
६ प्र. आज काल्ह रउरा भाई के नइखीँ देखत ?
उ. हमार भाई आज काल्ह किला में नोकर बाड़०; एने का ओर बउहत कम आवेले।
७ प्र. आज काल्ह अप०ने का बड़०की गाय के का हाल हवे ?
उ. ऊ आज काल्ह गाभिन बा, बाकी लेह०ना नइखे मीलत, तेही* सेँ दूबरि बाटे।
८ प्र. क० महीना सेँ गाभिन बा ?
उ. आठ महीना त० भइल, बाकी ओकर पेट ऊँच नइखे बुझात।
९ प्र. कोँह०रवतिया कि अब०ही ना ?
उ. हँ, तनी तनी बुझात बा ।
१० प्र. ई एकर क० बियान भइल? केत०ना दूध करेले ?
उ. ई एकर अठएँ बियान ह०। दू अढ़ाई सेर दूध एक जून करेले ।

*Emphatic form of तेह सेँ.

A Concise Encyclopaedia of North Indian peasant life
Edt: prof. Shahid Amin.

११ प्र. हम०रा एगो बक०री कीने के बा; रवाँ गाँवे मीली ?

उ. हमन्रा गाँवे बकन्री त० बाड़ी स०, बाकी दामे बड़ कड़ा बा।

१२ प्र. अप०ने के बक०री का भइल?

उ. हम चरे खातिर ओ के गाँव०ही ढिल०ले रहीले।

१३ प्र. किछु दूध करेले?

उ. लड़िकन के पीए भर हो जाला।

१४ प्र. अब०रिक ऊखि बोअले बाड़० की ना?

उ. ऊखि त० बोअले बानी, बाकि ओह मैं किछु जान नइखे।

१५ प्र. रवाँ हिआँ सैं बरन्हा मोटि मील राकेला?

उ. काहे ना ? पटउनी भइला पर ले लेब।

१६ प्र. रवाँ हिआँ क० गो मोटि चलेला?

उ. तीन गो माटि त० नंध०ले बानी।

१७ प्र. राउर आम के बगइचा किछु फरेला की ना?

उ. एह बेरी त० बदन्री सैं फेड़नि मैं मधुआ लागि गइल; नाही त बडे फरत रहल हा।

१८ प्र. थोरिका आम हम०रो के अचार खातिर पेठा देब?

उ. जब रवाँ मन मैं आबे, तबे आ के तुर०वा लीहीं।

१९ प्र. राउर लड़िका किछु पड़ेले की ना?

उ. हँ गुरू कीहाँ जाले; अछर त० चिन्हते बाड़े, बाकि आज काल्ह पहाड़ पढ़०ताड़े।

२० प्र. इस्कोल मैं काहे ना भेजीं?

उ. किछु सीख लेतु, त० भेज देब।

२१ प्र. हम०हूँ अप०ना लड़िका के इस्कोल मैं भेजे के चाह०ताड़ीं?

उ. बेस; त० हम०रा लड़िका का संडगे ओक०रो के भेज दीं।

Translation of a Conversation Between Two Villagers

1. Q. Tell me, brother, whence are you coming?
   A. From the next village.
2. Q. When did you start thence?
   A. Early this morning.
3. Q. Why did you go there?
   A. I have some land there, and went to see it.
4. Q. What is sown in it?
   A. Only some *rábar*.

5. Q. Tell me, brother, what are the prospects of this harvest?
   A. Are you asking about this harvest? Why, there has been great loss for want of rain.
6. Q. Your brother is not seen anywhere nowadays?
   A. Nowadays he is at service in the fort. He comes here very seldom.
7. Q. How is your big cow?
   A. Nowadays she is in calf, but she has got very thin for want of food.
8. Q. How many months is she gone in calf?
   A. It's eight months, but she does not look big with young.
9. Q. Are there any signs of pregnancy yet?
   A. Yes, there are a few signs.
10. Q. What calving of hers will this be? and how much milk does she give?
    A. This is her eight calving. She gives two or two and a half *seers* of milk at a time.
11. Q. I want to get a goat: shall I find one in your village?
    A. There are, indeed, goats in my village, but the prices are high.
12. Q. What has become of your goat?
    A. I have let it loose in the village to graze.
13. Q. Does it give any milk?
    A. Enough for the children's drinking.
14. Q. Have you planted any sugarcane this year, or not?
    A. I have, indeed, planted sugarcane, but there has been no produce.
15. Q. Can I get on loan from your people a well-rope and leather bucket?
    A. Why not? Take it any day when you want to irrigate.
16. Q. How many buckets have you working?
    A. There are three in use, irrigating.
17. Q. Have your mango-trees borne fruit this year, or not?
    A. This year, owing to the clouds, blight has attacked the trees, otherwise there would have been a great quantity (of fruit).
18. Q. Will you give me a few mangos for pickles?
    A. Whenever you want them, come and pluck them.
19. Q. Does your son know how to read, or not?
    A. Yes; I send him to the schoolmaster, and he has learnt his letters, and nowadays he is learning the multiplication table.
20. Q. Why not send him to read at school?
    A. Let him learn a little first, and then I'll send him.
21. Q. I also want to send my boy to school?
    A. Good: send him along with mine.

Fables

पहिल बात

मुरूगा आउर मोती के दाना

एगो मुरूगा गोबर का ढेरी के चेंगुर सें उट०केरत रहे। एके बेर एगो बड़ि चुक के मोती निकल आइल। मुरूगा कह०लस, अहा, एकर सूरत सकल आउर जोत कैसन बा, पर०खिया एक०रा के पाइत, खुसी सें फूल जाइत। बाकि हमार भूख एक०रा सें ना जाई। हाए, एगो चाउर के दाना हम०रा मीलित त० सैगो मोती सें बढ़ जाइत। सॉच ह०, जे अप०ना काम में ना आइल, से चूल्हा भन०सार में जाए।।

पहली बात

मुर्गा और मोती का दाना

एक मुर्गा गोबर के ढेर को पंजे से कुरेद रहा था। अचानक उसमें से बड़ा सा मोती निकल आया। मुर्गा बोला वाह क्याही रंग रूप और चमक दमक है। जोहरी इसे पाता तो फूला न समाता। पर मेरे पेट की आग इससे नहीं बुझती। हाय एक चावल का दाना मेरे हाथ लगता तो सौ मोतियों से बढ़ कर था। सच है–

जो अपने काम न आवै वह चुल्हे भाड़ में जावे ।

FABLE I

A cock was scratching with his spurs on dung-hill, when of a sudden a large pearl came out thereof. The cock said, 'Ah! how lovely and brilliant it is. If a lapidary had found it, he would have been extremely pleased; but the fire of my belly will not be extinguished with this. If one grain of rice had come to me, it would have been of more value than a hundred pearls. True it is that—

What is of no use to one, goeth into the oven.'

दोसर बात

एगो दुखिआ केहू सिध महात०मा सें आ के पुछ०लस के, हम भूखें मरीं, आउर हमार परोसिआ रात भोग सें दिन रात चैन करस; ओक०रा में कौन अइसन गुन बाटे, जे राम जी अतिना दिह०लत आउर हम०रा के दुखिया बनौलन। ई बात सुन के, बाबा जी बोल०ले, काहे बाबा, तूँ ई ना सुन०ल० ह०, राम जी उपर हो के सभ०का के देखत रहेलन; जेकर जइसन कमाई होला, तेक०रा के तइसन देलन।।

*The *Khari-boli* versions are taken from राधा लाल, *हिन्दी किताब, दूसरा नम्बर* (कलकत्ता, 1873)।

दूसरी बात

कंगाल का पूछना और अतीथ का उत्तर देना

एक कंगाल ने किसी पहुँचे हुए अतीथ से पूछा कि मैं तो भूखों मरूं और मेरा पड़ोसी गददी तकिये पर पड़ा लोट मारे। रात दिन चैन करे। उसमें कौन सा गुन है जो दाता ने उसको निहाल किया और मुझको कंगाल किया। यह सुनकर अतीथ ने उत्तर दिया बाबा तुमने यह नहीं सुना है–

राम झरोखे बैठ कर सबका गुजरा ले।
जैसी जिस्की चाकरी वैसा ही भर दे ॥

FABLE II

The Beggar's Question and the Pilgrim's Answer

A Beggar once asked a certain pilgrim, who had come to him, saying, 'I am dying of hunger, and my neighbour lies upon pillows and cushions and night and day lives at ease. What are his virtues that the Giver has blessed him and made me a beggar?' When the pilgrim heard this he replied, 'Sir, have you not heard this?—

Rám sitteth at an upper window and taketh cognisance of all,
and as each one's service is so he payeth him.'

तीसर बात

देस बिदेस फिर॰ला के लाभ

केहू भल अदिमी कौनो बाबा जी सेँ पुछ॰लेन के, महाराज जी, रवाँ देस देस गाँवे गाँव फिर॰ला सेँ का मीलेला। एक ठाईं बइस के राम राम काहे नाँ कहीँ। कौनो मठिआ मेँ बइस के पर॰मेसर के गुन काहे ना गाईं। बाबा जी कह॰लन, बाबा, ई साँच ह॰, बाकिं ई कहाउत तूँ नाँ सुन॰ल॰ ह॰, बहत पानी साफ रहेला जमल पानी गमक जाला। साधू लोग के फिर॰ले चलल अच्छा ह॰, जे मेँ उन के दाग नाँ लागे।।

तीसरी बात

देस परदेस फिरने के लाभ

किसी भलमानस ने एक गुसाईं से कहा। महाराज देस देस और गांव गांव भटकने से क्या लाभ है। एक जगह रहकर साईं में लौ क्यों नहीं लगाते। और किसी मठ में बैठ कर दाता का गुन क्यों नहीं गाते। जोगी ने कहा बाबा यह सब सच है पर तुमने यह कहावत नहीं सुनी है–

बहता पानी निर्मला बंधा गंदा होय।
साधू जन रमते भले दाग न लागे कोय॥

FABLE III

A Gentleman once asked a holy man, 'Reverend sir, what is the benefit of wandering about from country to country and village to village? Why not revere the name of Rám in one place? Why not sit in some temple singing the goodness of the Giver?' The sage replied, 'Sir, all this is true, but have you not heard this saying?—

Running water is clear, but confined water stinketh.
Good, men wander about and no taint affecteth them.'

चउठ बात

एक दीन जार का दीन मेँ केहू बड़ा अदिमी का घर मेँ आगि लागल, उन०कर सभ चीज बतुस जर के राख हो गइल। ऊ बह०रा खड़ा हो के पछ०तावा करत रहस। एत०ना मेँ एगो गरीब अदिमी, जार का मारे, थर थर काँपत, घर सेँ निकस आइल, आउर हाथ के सेके लागल। तब ऊ अमीर अदिमी बोल०ले, बाह जि बाह, केहू के घर जरे केहू तापे।।

चौथी बात

एक दिन जाड़े के दिनों में किसी बड़े आदमी के घर आग लगी। सारी चीज बस्त जलकर राख हो गई। वह बाहर खड़ा हाथ मल रहा था कि एक गरीब पड़ोसी जाड़े के मारे थर-थर कांपता हुआ घर से निकल आया और हाथ सेकने लगा। तब वह धनवान बोला, वाह—

किसी का घर जले कोई तापे।

FABLE IV

One day, in the cold weather, a certain rich man's house took fire. All his goods and chattels were burnt and reduced to ashes. He stood outside wringing his hands, when a poor neighbour, trembling and shivering with cold, came up and began to warm his hands (at the conflagration). Then the rich man said—

'Wah, wah! one man's house burneth and another warmeth his hands!'

पचईं बात

दा०हल लक०ड़ी, आउर खूलल लक०ड़ी

एगो गिर०हरत्त के लड़िकन अप०नन्ह मेँ लरत झगन्रत रहस; बात सेँ बउहत बुझउलस बाकि ऊ सभ ना मन०ले। गिर०हस्त अप०ना मन मेँ कह०लस के, जब ले हम ई लोग के आँखि सेँ किछु ना देखाइब तब ले ना बुझिहेँ। ऊ ए दीन अप०ना बेटन के बोलउलस, आउर कह०लस के, थोरे लक०ड़ी हम०रा साम०ने ले आव०। गिर०हरत्त ऊ लक०ड़ी सभ के एक रस०रौ मेँ कस के बान्ह०लस। तब ऊ सभ सेँ कह०लस के रस०री जन खोल० आउर लक०ड़ी सभ के टूड़ डाल०। ऊ सभ बउहत जोर कइलन, बाकि किछुओ ना भइल। फिनु गिर०हस्त खोल के

एक एक गो लक०ड़ी इन के देलस, जे ह०रा के ऊ लोग तुर०ते तूर देले । तब उन०कर बाप कह०लस कें, ए बेटा तूँ लोग बा०इल लक०ड़ी के नीअ अप०ननह मेँ मीलल रहब०, त० सभ मुदइ के दबउले रहब०, आउर जब अलग अलग होइब० त० बूझ० के बिगर गइल०। अलग अलग भइला सें बिग०रल।

पांचवी बात

बंधी लकड़ियां और बिखरी लकड़ियां

एक किसान के लड़के आपस में बहुत लड़ा झगड़ा करते थे। बातों से बहुत समझाया पर किसी ने कुछ न माना। तो किसान ने अपने जी में कहा कि जो इनको कुछ कर दिखाऊँ तो चाहे ये कुछ समझ जायँ। एक दिन उसने अपने बेटों को बुलाया और कहा कि थोड़ी लकड़िया मेरे साम्हने ले आओ। उन लकड़ियों को उस किसान ने एक रस्सी से कस कर बांधा। फिर हर से कहा कि रस्सी मत खोलो और लकड़ियों को तोड़ डालो। हर एक पिल पड़ा पर कुछ न हुआ फिर किसान ने खोल कर एक-एक लकड़ी दी तो उन्होंने झट पट तोड़ डाला। तब उनके बाप ने कहा कि जो तुम बंधी लकड़ियों के ढब से आपस में मिले रहो सब बैरियों के दांत खट्टे करोगे और जब बिखर गए तो जानो कि बिगड़ गये।

बिखरे सो बिगड़े।

FABLE V

Sticks in a faggot and sticks loosened

The sons of a certain farmer used to quarrel amongst themselves. He remonstrated with them verbally, but none of them paid any attention to him. Then the farmer thought to himself that if he could explain to them by some action, they would certainly understand something.

One day he called his sons, and told them to bring before him a few sticks. These sticks the farmer tied into a faggot with a string. Then he said to each (of his sons), 'Do not open the string, but break the sticks.' Each went at it with a will, but nothing came of it. Then the farmer untied the string and gave them the sticks one by one, which they broke immediately. Then their father said to them, 'My sons, if you remain united like the faggot, you will set your adversaries' teeth on edge; but if you seperate, then know that you are ruined.'

'*Separated is ruined.*'

छटई बात

हुँड़ार आउर भेड़ी के मेल

एक दीन हुँड़ार भेड़ी सें भेज०लस के, आव०, हम आउर तोहनी का अप०न०ह मेँ मेल करीं; काहे अप०न०ह मेँ लरीं, आउर आपन अप०ना जान के गाहक रहीं। ईहे पानी कुत्ता लराई के जड़ हवे स०। अस०हीं सब

जगे भूक भूक हमनी के लरावत फिरेले स०, आउर हमन्रा तोह०रा सँ झग०रा करावेले स०। इन०का के हम०रा इह०वाँ भेज द०। फिनु झग०रा का वा। हम०रा आउर तोह०रा मँ सभ दीन सलाह आउर मेल रही। त० एको तोहर बार टेढ़ ना होई। गँवार भँड़ी ऊ नट०खट हुँड़ाड़ के बात मान लेलस, आउर कुत्ता सभ के हुँडाड़ का लगे भेज देलस। पहिले त० हुँडाड़ कुत्ता सभ के खा गइल, फिनु भँड़ी का पीछे हाथ धो के परल, आउर थोर०ही दीन में सभ भँड़ी के खा गइल।। साँच ह०, दुस०मन सभ दीन धोखा देला; ऊ बड़ गँवार ह० जे दुस०मन के साँच बुझेला।।

छठी बात

भेड़ियों और भेड़ों का मिलाप

एक बार भेड़ियों ने भेड़ों से कहला भेजा कि हम तुम आपस में मिलाप करलें। क्यों आपस में लड़ें और एक-दूसरे के लोहू के प्यासे रहें। ये पाजी कुत्ते सारी लड़ाई की जड़ हैं यो ही सदा भौंक-भौंक कर हमें भड़काते हैं और हम को तुम से लड़ाते हैं। इनको हमारे पास भेज दो फिर क्या झगड़ा है। हम तुम में सदा प्यार और मिलाप रहेगा तो तुम्हारा बाल बँका [बांका] न होगा। गंवार भेड़ों ने इन नटखट भेड़ियों की बात मान ली और कुत्तों को भेड़ियों के पास भेज दिया। पहिले तो भेड़ियों ने कुत्तों को चट किया, फिर भेड़ों के पीछे पंजा झाड़ कर पड़े और थोड़े ही दिनों में सब भेड़ों को भी डकार गए। सच है–

बैरी सदा धोखा देते हैं व बड़े गंवार हैं जो बैरी को सच्चा समझें।

FABLE VI

A Friendship between the Wolves and the Sheep

Once upon a time the wolves sent word to the sheep, saying, 'Come, let us make friends. Why should we fight amongst ourselves, and each remain thirsting for the blood of the other? These scoundrelly dogs are the root of the quarrel. They make us quarrel by their perpetual barking: send them all to us, and then what quarrel (can) there be? We shall always remain in love and friendship; not even a hair of you will be turned.' The foolish sheep believed the words of these deceitful wolves, and sent the dogs to where the wolves were staying. Well, first the wolves ate up all the dogs, and then fell with sharpened claws upon the sheep. In a very few days they devoured all the sheep also. True it is that—

'Enemies always deceive, and people are fools who believe that their enemy telleth the truth.'

सतई बात

बाघ आउर हुँड़ाड़ आउर चीता

एक दीन बाघ आउर हुँड़ाड़ आउर चीता अप०नन मँ ई बात गोचर कइले कें, हमनी का मील के सिकार करीं। फिनु अप०न०ह मँ बाँट लीं। ई बात ठह०रा के बन मँ कूदे फाने लग०ले, आउर एगो बड़न्का एक हरीन करिया

मार०लन स०। तब बाघ बोलल के आव०, एक०रा के बाँट लीं, आउर तुर०त०हीं ओक०रा के तीन टूका कर दिह०ले स०, आउर गरज के बोलल के, पहिल टुक०ड़ा त० हम लेब, काहे के हम बन के राजा हईं, दोस०रो हम०हीं लेब काहे के एक०रा का मारे मैं बड़ि मेहन्नत कइलीं है; आउर तीसर टुक०ड़ा ईहे धइल बा, देखीं त० केकर टँग०री परेला के हम०रा सामन्ने सँ उठा ले जाला। ई सुन के चीता आउर हुँड़ाड़ पाँछ दबा के भग०ले, आउर बाघ अकेले हरीन के खा गइल। ई कहाउत साँच ह०, जेकर लाठी ओक०रे भँइस।।

सातवीं बात

बाघ, भेड़िया और चीता

एक बार बाघ, भेडिये, और चीते ने आपस में यह ठहराया कि सब मिलकर शिकार मारें फिर आपस में बांट लें। यह ठान कर जंगल में कूद फांद करने लगे और जब एक बड़ा सा काला हरिन मार लिया तब बाघ बोला कि लाओ इसको बाटें। और झट उसके तीन हिस्से कर डाले। और गरज कर बोला कि पहला हिस्सा तो हम लेंगे क्योंकि हम जंगल के राजा हैं। और दूसरा भी हम लेंगें क्योंकि हमने इसके मारने में बहुत दौड़ धूप की है और तीसरा टुकड़ा यह धरा है देखें तो किसका जोर पड़े जो हमारे साम्हने से उठा ले जाय। यह सुनि कर चीता और भेडिया दुम दबाकर भागे और बाघ ने हरिन को अकेले चट किया। यह कहावत सच है–

जिसकी लाठी उसकी भैंस

FABLE VII

Once upon a time a tiger, the wolves, and the hunting leopards, agreed amongst themselves to unite in a hunting expedition, and afterwards to divide (the) booty amongst themselves. Having thus agreed, they began to leap and spring in the forest, and killed a large black deer. Then the tiger said, 'Come, let us divide it,' and immediately dividing it into three parts said with a roar, 'The first part I shall take, because I am king of the forest, and the second because I have spent much running and exertion in capturing it, and the third part I have placed here; let me see who is able to take it up from before me.' When the leopard and wolf heard this, the lowered their tails and ran away, and the tiger ate up the whole deer. This saying is true--

'*Whose is the cudgel, this is buffalo.*'

आठई बात

माटी आऊर पीतर का घइला के बात०चीत

एक बेर कहिँ नदी बढ़ल रहे, ओह में एगो पीतर के घइला, आउर एगो माटी के घइला बहल जात रहे। पीतर के घइला माटी का घइला सँ कह०लस के, हम०रा साथ लागल चल० त० हम तोह०रा के बचा लेब। माटी के घइला बोलल, ई बात अप०ने बहुत अच्छा कह०लीं, हम अप०ना के भला मानब आउर सदा गुन गाइब;

बाकि सच पूछीं, त० हम०रा ई डर बा, कत०हीँ पानी का लहर का धक्का सँ अप०ने का पास ना जारहीँ; काहे के अप०ना फरक रह०लीँ, तो ऐसे ही हिलत झूलत कत० हूँ तीर पर जा पहुँचब; बाकि जौँ अप०ने सँ भेँट भइल, आउर कत०हूँ भूल से ठोकर लग गइल, तो हमार पेट फाट जाई। सच बा, बड़न सँ आस रक्खीँ, बाकि लगे ना जाई।।

आठवीं बात

मिट्टी और पीतल के घड़े की बातचीत

एक बार कहीं नदी चढ़ी तो एक पीतल का घड़ा और एक मिट्टी का घड़ा बह चले। पीतल के घड़े ने मिट्टी के घड़े से कहा कि हमारे साथ लगे चलो हम तुम को बचा लेंगे। मिट्टी का घड़ा बोला आपने बहुत अच्छी बात कही। मैं आपका भला मानूंगा और सदा गुन गाऊँगा। पर सच पूछो तो मुझे यह डर है कि कहीं पानी की लहर के धक्के से आप के पास न जा रहूँ। क्योंकि जो आप से दूर रहा तो यों ही हालता [हिलता] झुलता कहीं तीर पर जा लगूंगा। पर यदि आप से भेंट हुई और कहीं भूले से टक्कर लग गई तो मेरा पेट फट जाएगा। सच है--

बड़ों से आस रखे पर पास न जाय।

FABLE VIII

A Conversation of the Earthen and Brass Pitchers

Once upon a time somewhere a river rose, and an earthen pitcher and a brass one were floated away. The brass pitcher said to the earthen, 'Come along close by me and I'll take care of you.' The earthen said, 'The words which you have spoken are exellent, and I shall always be grateful to you and sing your praises for them; but if you ask the truth, (I must confess to) this fear that from the motion of the waves I may perchance be knocked against you. Now, if I remain apart from you, while I am thus washed hither and thither I will reach the bank somewhere; but if I meet you, and anywhere accidentally knock against you, my belly will be burst.' True it is—

'Hope in the great, but go not near them.'

नवईं बात

एगो मुन०सी बजार मेँ बइसल चिट्ठी लीखत रहस। एगो पर०देसी अइले, आउर कह०ले, मुनन्सी जी, का लीखत बानीँ। मुन०सी जी जवाब दिह०ले के, भाई, चिट्ठी लीख०तानीँ। तब ऊ कह०ले के, हम०रो सलाम लीख दीहल जाई। मुन०सी जी कह०ले के नाहीँ जी, अर०जी लीखत बानीँ, तब ऊ कह०ले के, हम०रो सही कर दीँ। मुनन्सी जी अगुता के कह०ले के, तमरसुक लीख०तानीँ, तब ऊ कह०ले के, हमार गोवाही लीख दीँ। मुन०सी जी, बिचार कइलन, ई त० केहू अजब ढंग के अदिमी देखाइ देत बाड़। पुछ०ले के, अप०ने के नाम का ह०। तब ऊ हँस०ले, आउर कह०ले के, हमार नाम ईहे ह०, मान चाहे मत मान, हम तोहार मेह०मान।।

नवीं बात

एक मुंशी बाजार में बैठा हुआ चिट्ठी लिख रहा था। एक विदेशी आया और बोला मुंशी जी क्या लिखते हो। मुंशी ने उत्तर दिया कि भाई चिट्ठी लिखता हूं। उसने कहा मेरा भी सलाम लिख दीजिये। मुंशी जी ने कहा नहीं जी अर्जी लिखता हूं। उसने कहा तो मेरा भी सही कर दीजिये। मुंशी उकता कर बोला तमस्सुक लिखता हूं वह बोला मेरी भी गवाही लिख दीजिये। मुंशी ने सोचा यह तो कोई अनोखे ढंग का आदमी दिखाई देता है। पूछा आप का नाम क्या है। वह हँसा और बोला मेरा नाम है–

मान न मान मैं तेरा मेहमान।

FABLE IX

A Scribe was sitting in the bazár writing a letter. Up came a stranger, who said, 'Mr. Munshí, what are you writing?' The scribe replied, 'Brother, a letter.' The other said, 'Send my compliments also.' The scribe said, 'No, I'm writing a petition.' Said he, 'Let me sign it too.' Wearied at his importunity the scribe said, 'It's a bond I'm writing.' 'Then,' said he, 'write me also down as a witness.' The scribe thought to himself this is a queer kind of fellow, and asked him his name. The other laughed and said, 'My name is—

'*Whether you honour me or nay, still with you I mean to stay.*'

दसई बात

एगो बड़ा अदिमी का घर में रात के आगि लागल, ऊ त० आपन बाल बच्चा समेत निकस के भग०ले, आउर नोकर के हुकुम देले, कि चीज बतुस निकास०। एहि में आगि बहुत लहक गइल; सभ घर लह०रे लागल। नोकर कह०ले के, हम कौन कौन चीज निकासीं, तब ऊ बड़ अदिमी पछ०ता के कह०ले, बाबा, मकान में आगि लागल बा, जे निक०से सेहीं लाभ।।

दसवीं बात

एक बड़े आदमी के घर रात के समैं आग लग गई। वह तो अपने बाल-बच्चों समेत निकल भागा और नौकरों को हुक्म दिया कि चीज़ बस्त निकालो। इतने में आग और भड़क गई। सारा घर धुआं-धुआं हो गया। नौकर बोले जी हम क्या-क्या निकालें। उस बड़े आदमी ने ठंडी सांस भरी और कहा, बाबा—

आग लगते झोंपड़े जो निकले सो लाभ।

FABLE X

A rich man's house once took fire by night. He escaped outside with his family, and told his servants to bring out his chattels. Just then the fire blazed up exceedingly, and the house became a mass of flames and smoke. His servants asked what special things they were to bring out, and he said with a deep sigh—

'*My men, when a hut's afire, whatever is saved is gain.*'

इगारन्हीं बात

गँवार अहिरिन

एगो गँवार अहिरिन माँथ पर दही के हँडिया रख०ले चल जात रहे। चलत चलत ओक०रा मन में ई उमंग उठल के, ई दही के बेचब, आउर ढेबुआ सें आम कीनब; किच्छु आम हम०रा पास बा, सभ मिला के तीन सै सें किच्छु बढ़ जाई। ए में किच्छु सड़ जाई; बाकि हँ, अढ़ाई सै तो बच जाई। आउर ओह में सें जे बच जाई ओकर अच्छा दाम मीली, त० दिअरी में एगो हरिअर सारी कीनब। हँ, हँ, हरिअर सारी हम०रा मुँह पर अच्छा सोभी आउर बस हम त० हरिअरे सारी लेब; आउर ओक०रा के पहिन के मेला जाइब; आउर खूब अइँठ के अप०ना कपड़ा गह०ना के सोभा आउर मुँह के चमक दमक देखाइब; आउर चाल में सै सै गो जोड़ खाइब। अइसन सोच बिचार में गँवार अहिरिन कुच्छो चमक के टेढ़ चलल, के दही के हँड़िआ ओक०रा माँथ सें गिर के चूर चूर हो गइल, आउर सभ घर बगल बनावल बिगड़ गइल।।

ग्यारहवीं बात

गँवारी ग्वालन

एक गँवारी ग्वालन सिर पर दहेड़ी रक्खे हुए चली जाती थी। चलते-चलते उसके जी मे यह उमंग उठी जों ही इस दही को बेचूंगी और पैसों से आम मोल लूंगी। कुछ आम मेरे पास है। सब मिला कर तीन सौ से कुछ बढ़ जायेंगे। इनमे कुछ सड़ सड़ा जायेंगे। पर हाँ ढाई सौ तो बच ही रहेंगे। और उनमें से जो बच निकलेंगे उनके अच्छे दाम उठेंगे। तो दीवाली पर एक हरी साड़ी लूंगी। हां-हा हरी साड़ी मेरे मुँह पर अच्छी खुलेगी और बस मैं तो हरी ही साड़ी लूंगी। और उसे पहन कर मेले जाऊँगी और खूब अकड़-मकड़ कर अपने गहने कपड़ों की फबन और मुखड़े की चमक दमक दिखाऊँगी और चाल-चाल में सौ सौ बल खाऊँगी। इस सोच विचार में वह गँवारी ग्वालन जो कुछ चमक दमक कर टेढ़ी चाल चली तो दहेड़ी सिर से गिर कर चूर-चूर हो गई और सारा बना बनाया घर बिगड गया।

FABLE XI

An ignorant milkmaid was going along with a pot of curd upon her head. As she trudged along the pleasant idea came into her noddle, 'I'll sell these curds; with the price I get for them I'll buy some mangoes. I have at home already a few mangos, and altogether there will be more than three hundred. Some of them will perhaps go bad, but at any rate I'll have two hundred and fifty, and for them I'll get a fine price. Then I'll buy a green *sárí* at the *diwáli* festival. Yes, yes, a green *sárí* will become my style of face beautifully. And then! I'll take it, and put it on for the fair, and step out proudly and show off the finery of my clothes and ornaments and the beauty of my face, bowing a hundred times at every step.' As she imagined all these fine things, the foolish milk-maid in her stateliness gave a lurch, and the curd-pail fell from her head and was smashed to atoms, and all the fine castle which she had built for herself was dissipated.

बारन्हीँ बात

चील्ह आउर कउआ

एगो चील्ह का ठोर मेँ छोँछा रहे। कित० ऊँ धर०ती पर पटक०लस, बाकि टूटल नोँ। त० एगो कउआ ओक०रा के कह०लस के, एह घोँघा के ठोर मेँ ले के बहुत ऊँच उड़ जा, आउर उह०वाँ सेँ गिरा द० त० घोँघा टूट जाई। चील्ह कह०लस के, ई बहुत अच्छा कहत बा, आउर घोँघा के ले के उड़ गइल, आउर बउत ऊँच जा के गिरा दिह०लस। जइसे घोँघा धर०ती पर गिरल, के टुक०ड़ा टुक०ड़ा हो गइल, आउर कउआ ओकर गूदा खा गइल । थोरा देर मेँ चील्ह नीचे उत०रल, त० खोइआ छाड़ के आउर किछुओ ना पउलस।।

बारहवीं बात

चील और कौआ

एक चील की चोंच मे एक घोंघा था। कितना ही धरती पर दे दे मारा पर घोंघा न टूटा। फिर एक कौए ने यह बात बताई कि इस घोंघे को चोंच मे लेकर बहुत ऊँची उड़ जा और वहां से गिरा तो घोंघा टूट जायेगा। चील ने कहा यह बहुत अच्छी बात है। और घोंघे को लेकर उड़ी और बहुत ऊँचे जाकर छोड़ दिया। जों ही घोंघा धरती पर गिरा टुकड़े–टुकड़े हो गया और कौआ उसका गूदा चख गया। थोड़ी देर में चील नीचे उतरी तो छिलके के सिवाय कुछ न पाया॥

FABLE XII

The Kite and the Crow

A Kite once held a cockle in his beak, and kept knocking it against the ground, but it would not open. Then a crow showed him how to do it. 'Fly up a great height with the cockle in your beak, and let it fall from there.' The kite thought this excellent advice and flew up with the cockle, and when he had got very high up he let it go. The cockle fell to the earth and was immediately smashed in pieces. Thereupon the crow ate up the inside. Shortly afterwards the kite came down, but could find nothing but the (broken pieces of) shell (and flew away).

तेरन्हीँ बात

खट्टा अँगूर

एगो खिखिर कौनो फूल०वारी मेँ गइल; देख०लस के अँगूर के अइसन घवद पाकल टाटी पर लट०कल बा, के जेह मेँ सेँ रस चूअत बा, आउर केहू रख०वारी ना रहे। ई देख के ओक०रा बड़ लालच भइल। ऊ बहुत कूदल फानल बाकि अँगूर का घवद के भीरे ना पहुँचल । जब कौनो तरह सेँ दाव ना लागल, त० अइसन बर०बरात उह०वाँ सेँ चलल के खट्टा अँगूर के खाए जाउ।।

तेरहवीं बात

खट्टे अंगूर

एक लोमड़ी किसी बाग में जा निकली। देखा अंगूरों के ऐसे गुच्छे पके हुए टहनी पर लटक रहे हैं कि जिनसे रस टपका पडता है और कोई रखवाला भी नहीं है। यह देखकर उसके मुंह में पानी भर आया। बहुतेरी उछली कूदी पर अंगूर के गुच्छो तक न पहुँच सकी। जब किसी ढब दांव न लगा तो यों बड़बड़ाती हुई वहां से चली कि–

खट्टे अंगूर कौन खाय।

FABLE XIII

Sour Grapes

A fox one day found himself in a garden, and saw bunches of grapes hanging from the trellis so ripe that the juice was dripping from them. No one was even watching, and when he saw them his mouth filled with water. He jumped and leaped a great deal, but could not reach even near them. When in any way his efforts were not successful, he went away muttering—

'*Who eats sour grapes*'

चउदन्हीँ बात

रसाइनी

एगो रसाइनी केहू बड़ा अदिमी सेँ कह०लस, जोँ तूँ किच्छु चाँदी हम०रा इह०वाँ ले आव०, त० हम एक अइसन जड़ी एह में गाड़ी के तुर०त ही ऊ चाँदी सोना हो जाए। ऊ सोझ अदिमी ओक०रा दम०पट्टी में आ गइल, आउर कहीँ सेँ दुख सुख सह के दू सै रूपैया के चाँदी ऊ रसाइनी के आन दिह०ले। रसाइनी ओही' रात के बिछउना उठा के कहीँ चल दिह०लस। तब ऊ बिचारा गरीब दुख मेँ पर के ओह नट०खट रसाइनी के खोज म दउरल फिरल, बन बन छान डल०लस बाकि कत०हीँ रसाइनी के पता ना लागल एक०रा के एह तरह सेँ धव०ड़ाइल देख के, एगो अदिमी कह०लस के, तोह०रा सेँ भूल भइल, के ओह नट०खट अथीथ के फ०दा मेँ पर०ल०, आउर अब पछतावताड़०। ओक०रा खोज मेँ दउर धूप कइला सेँ अभ वि छुओ नइ०खे होखत। एह बात पर एक बात तोह०रा के कहत बानी, जेक०रा के सभ दिना इआद करिह०॥

चौदहवीं बात

रसायनी

एक रसायनी ने किसी आदमी से कहा कि जो तुम कुछ चांदी हमारे पास ले आओ तो हम एक ऐसी जड़ी निचोवें कि तुरंत उस चांदी का सोना हो जाय। वह सीधा-साधा आदमी उर के दम झांसे में आ गया और कहीं से दुख-सुख सहकर दो सौ रूपयों की चांदी उस रसायन को ला दी। रसायनी उसी रात को बिस्तर उठा कर कहीं

चलता हुआ। अब वह बिचारा विपत का मारा उस नटखट रसायनी की खोज में दौड-धूप करने लगा। जगल-जंगल छान मारा। पर उस रसायनी का कहीं पता नहीं लगा। उसको इस तरह से घबराया देखकर एक आदमी ने कहा कि तुम से यह भूल हुई कि उस नटखट अतीथ के फंदे में पड़ गये पर अब पछताने और उसकी खोज में दौड़-धूप करने से भी कुछ नहीं होगा। इस बात पर मैं एक बात तुमको सुनाता हूँ जो कि सदा याद रखनी चाहिए।

FABLE XIV

The Alchemist

An alchemist said to a certain man, 'Do you bring to my house some silver, for I know a root so wonderful that by merely extracting its juice the silver will straightway become gold.' The simple fellow fell into the trap, and with all the trouble in the world got two hundred rupees in silver from somewhere, and brought them to the alchemist. The latter that very night took up his bed and departed thence. Then the unhappy fellow, stricken by misfortune, began to run everywhere in search of the cheating alchemist. He searched woods and forests, but nowhere could he find any trace of him. Seeing him thus distracted, a man said to him, 'You have made one mistake in falling into the swindler's net, but now nothing will come of your lamenting and running hither and thither searching for him. On this account I'll tell you a story, which you must remember all your days.' (And accordingly he told him)

पन्दरन्हीं बात

एगो चिरईं केहू गिर०हस्त. का गाछी में जा के कच्चा पाकल फल सभ के सभ काट के गिरा देत रहे. त० गिर०हस्त सभ दिना ओक०रा ताक में रहे. एक दीन अँगूर का टाटी पर जाल लगा के ओक०रा के धइलस, आउर मुआवे के चह०लस । त० चिरईं गिर०हस्त सें कह०लस के, जों तूँ हम०रा के छाड़ द०, त० हम ई भलाई का बद०ला में तोह०रा के बहुत बात बता देब, जेह में तोह०रा बड़ लाभ होई।। गिर०हस्त कह०लस के, पहिले बता द००त० तोह०रा के छाड़ दीं। चिरईं तीन गो बात कह०लस, एक त० ई बात जे, दुस०मन अप०ना अखनतियार में आ जाए, त० छाड़े के ना चाही, दोसर जे बात अप०ना बुध में ना आवे, त० ओक०रा के ना माने के तोसर बीतल बात के ना पछ०तावे के। आउर चउथ बात एगो आउर बा, के जब तूँ हम०रा के छाड़ देब० त० कहब। गिर०हस्त ई बात सुन क अइसन कह०लस बइस०ने कइलस, आउर ऊ चिरईं के छाड़ दिह०लस। चिरईं भीत पर बइस के कह०लस के, हम०रा पेट में मुरूगा का अण्डा सें ओ बड़०हन एगो मोती बा, जों तूँ हम०रा के ना छाड़ित०, आउर मार दिहित०, त० ऊ मोती तोह०रा हाथ लागित। गिर०हस्त पछ०ताए लागल। त० ऊ कह०लस, ए गँवार, तें हमार तीनो बात अबहीं भूल गइ०स; काहे के हम तोहार दुस०मन हईं जब धइल०, त० छाड़े के नाँ चाहत रहे; आउर मुरूगा का अण्डा के बराबर त० हम०हीं नइखीं,

फिर ऊ मुरुगा का अण्डा सँ बढ़ के हमरा के पेट मँ रहल, कब बुध मँ आ सकेला। बाकि तूँ एह बात पर भरोसा कइल० आउर जौं अब तोहरा हाथ सँ निकस गइलीं, त० पछन्तउला सँ का होला। एह सँ ईहे फल निकन्सत बांट, के पहिलहिँ सँ सभ काम सोच बिचार के करे के चाही, आउर जे काम बिगर जाए, त० पछन्तावे के ना चाही।।

पंद्रहवीं बात

एक चिड़िया किसी किसान के बाग़ में जा कर कच्चे पक्के फल सब के सब काट जाया करती थी। किसान सदा उसकी ताक में था। एक दिन अंगूर की टहनी पर जाल लगाकर उसको पकड़ा और मारना चाहा। चिड़िया ने किसान से कहा कि जो तम मुझको छोड़ दे तो मैं इस भलाई के पलटे तुझ को कई बातें बता दूं कि जिससे तुझको बड़ा लाभ होगा। किसान ने कहा कि तू पहले बता दे तो मैं तुझ को छोड़ दूंगा। चिड़िया ने उससे तीन बातें कहीं। एक तो यह कि बैरी अपने बस में आ जाय तो छोड़ना नहीं चाहिये। दूसरी जो बात ध्यान में न आवें उसको नहीं मनाना चाहिये। तीसरी खो गई चीज़ के लिए पछताना नहीं चाहिये। और चौथी एक और बात है कि जब तू मुझे छोड़ देगा तब कहूंगी किसान ने इन बातों को सुनकर जैसा कहा था वैसा ही किया और उस चिड़िया को छोड़ दिया। तो चिड़िया ने दीवार पर बैठ कर कहा कि मेरे पेट में मुर्गी के अंडे से भी बड़ा एक मोती था। जो तू मुझे न छोड़ता और मार डालता तो वह मोती तेरे हाथ लगता। किसान पछताने लगा। उसने कहा ए गंवार तू मेरी तीनों बातें अभी भूल गया। क्योंकि मैं तेरी बैरी थी। जब पकड़ पाया था तो छोड़ना क्या था और मुर्गी के अंडे से बढ़कर मोती मेरे पेट में होना कब ध्यान में आ सकता है पर तैंने इस बात पर भरोसा किया। और जब मैं तेरे हाथ से निकल गई तो पछताने से क्या होता है। इससे यही फल निकलता है कि पहले ही से हर एक काम को बहुत सोच विचार के करना चाहिये और जो काम बिगड़ जाय तो फिर पछताना नहीं चाहिये।

FABLE XV

(Sequel to the above Fable XIV)

A bird used to go into the garden of a certain farmer and break off his fruit, ripe and unripe. The farmer kept continually on the watch for it, and one day caught it in a net which he had fastened to a vine trellis, and proceeded to kill it. The bird said to him, 'If you let me go, in return for the favour I will teach you certain things which will be of great use to you.' The farmer said, 'First teach me and then I'll let you go.' The bird told him three things,—first, 'When you have your enemy in your power, never let him go,' second, 'When a thing is incredible, don't believe it,' and third, 'Don't waste regrets on a thing that's gone for good,' 'and,' added he, 'there is a fourth thing which I will tell you when you let me go.' When the farmer heard this he did as he had promised, and let the bird go. It (flew away and) sat on the top of a wall and said, 'In my belly there is a pearl as big as a hen's egg. If you had not let me go, but had killed me, you would have got it.' Then the farmer began to regret (his kindness), and the bird went on to

say, 'You fool! You have already forgotton my three bits of advice; for I was your enemy. When you had caught me, why did you let me go? And I am myself not as big as a hen's egg; so how is it credible that a pearl bigger than me should be in my belly? Yet you fixed your hopes on what I said, and now that I have escaped from your hand what is the good of your refretting it?'

The moral of this is that nothing should be done without previous great care and deliberation, and that when anything has gone wrong there is no good in regretting it.

सोरन्ही बात

केहू धनी के दूगो लरिका रह०ले। जब उन कर बाप मर गइले, त० दूनू भाई धन आपुस मेँ बाँट लिह०ले। बड़ भाई आपन रूपैया पइसा सुख चैन आउर खेल तमासा मेँ उरावे लगन्ले, आउर छोट भाई जतन सेँ बनिआई बैपार करे लग०ले। एक दीन बड़ भाई छोटा भाई सेँ ओरह०ना दे के कह०नस के, ए भाई, काहे दीन भर अनाज तउलत रहेल०; हमन्रा साथ रह०, खा पीअ, चैन कर०। बहुत दीन का बाद, जब छोट भाई लेन देन के बउत रूपैया बिटोर०ले, त० उन०कर बड़ भाई, जे राग रंग खेल तमासा मेँ आपन सभ धन उड़ा के भिखार हो गइले, उन०का दुआर पर आ के कहे लग०ले के, ए भाई, हम तोह०रा के ह०सी मेँ उड़ावत रह०लीँ। जौँ हम०हूँ तोह०रा लेखा बनिआई बैपार कर०तीँ, आउर अनाज तउलन्तीँ, त० आज पाव भर अनाज एने ओने सेँ माँग के ना खइतीँ। सीख ह०, आरा०कत अइस०ने कीड़ा ह०, के धन के धुर कर देला।

सोलहवीं बात

किसी धनवान के दो लड़के थे। जब उनका बाप मर गया तब दोनों भाइयों ने उसका धन आपस में बांट लिया। बड़ा भाई अपना रुपया पैसा सुख चैन से खेल तमाशे में उड़ाने लगा और छोटा भाई बड़े जतन से बनिज बैपार करने लगा। एक दिन बड़े भाई ने छोटे भाई को उलहना देकर कहा कि भाई क्यों दिन भर अनाज तौला करते हो। मेरे साथ रहो। खाओ पिओ चैन करो। बहुत दिन पीछे जब छोटे भाई ने लेन देन कर के बहुत रुपया इकट्ठा कर लिया तो उसका बड़ा भाई जो राग रंग और खेल तमाशे में अपना सब धन उड़ा भिखारी हो गया था उसकी डिहुढ़ी पर आके कहने लगा कि भाई मैंने तो पहले ठट्ठे में उड़ाया था पर अगर जो मैं भी तुम्हारी नाई बनिज बैपार करता और अनाज तौलता तो आप पाव भर अनाज इधर से उधर मांगकर नही खाता। सच है—

आलस ऐसा कीड़ा है कि धन को धूल कर डालता॥

FABLE XVI

A rich man had two sons. When their father died they divided his property between them. The elder brother wasted his money in pleasure and dissipation, and the younger began to work as a merchant with great energy. One day the elder brother ridiculed the younger, saying, 'Brother, why do you spend the

whole day weighing food? Come and live with me. Eat, drink, and enjoy yourself.' Long afterwards, when the younger brother, by his traffic, had collected great wealth, the elder, who had wasted all his in dissipation, and who had become beggared thereby, came to his mansion and said, 'Brother, I ridiculed you in sport formely; but if, like you, I had traded and weighed out food, I would not to-day be eating myself a quarter of a *ser* of food begged here and there. True it is that—

'*Idleness is a maggot that turneth wealth to dust*'

सतरन्हीँ बात

लालन्ची कुत्ता

एक कुत्ता नदी का तीर पर हाड़ पउलस, आउर मुँह में ले लेलस। जइसेहीँ परिछाहीँ ओकर पानी मेँ देख०लस तइसेहीँ समुझ०लस के दोसर हाड़ बाटे। मारे लालच के मुँह खोल०लस, के ओक०रो के पानी सेँ निकास लीँ। त० ऊ हाड़ जे मुँह में रहे सेहू गिर गइल। साँच ह०, माँछी बइसल दूध पर, पाँख गइल लप०टाए, हाथ माँसे आउर माँथ पीटे, लालच बड़ि बलाए।

सत्रहवीं बात

लालची कुत्ता

किसी कुत्ते ने नदी के तीर एक हड्डी पाई, और मुँह में ली। जोंही पर्छाई उसकी पानी में देखी, समझा कि दूसरी हड्डी है। मारे लालच में मुँह खोला कि उसे भी पानी से निकालिये [*sic*] वह हड्डी जो मुँह में थी, सो भी खोई। सच है–

मक्खी बैठी दूध पर पंख गये लपटाय।
हाथ मले अरु सिर धुने लालच बुरी बलाय।।

FABLE XVII

The Greedy Dog

A certain dog found a bone on the bank of a river, and took it up in his mouth. When he saw its reflection in the water he thought that it was another bone, and through greed opened his mouth to pick it out; but he lost the bone which was (really) in his mouth. True it is that—

'*A fly sat upon milk and got its wings smeared therewith. He beateth his head and wringeth his hands, and saith, "Greed is a great evil."*'

Bhojpuri Songs

The following songs have been collected in the Sháhábád district with help of Munshí Rádhá Lál, Deputy Inspector of Schools.

In reading them it must be remembered that (as in all poetry) there are no silent final consonants, as there are in prose. Thus सुभ is pronounced in poetry *subha,* while in prose it is *subh.*

In poetry, also, there is no neutral vowel. Thus, while in prose for 'you saw' we should say देख०लस *dekh'las,* in poetry we should say देखलस *dekhalasa.*

Each line contains a certain number of instants, which is noted at the top of each song. A short syllable contains one instant, and a long syllable contains two. The rules for the quantity of syllables are nearly the same as in Latin. Sometimes a long syllable is read as a short one. Such cases I have marked with a perpendicular stroke over the long syllable. Thus सीता in the first line of the first song. In this word both syllables are naturally long, but they are read as if they were short to suit the metre.

Many of the following songs contain words like है, ना, हो राम, which are mere expletives, used to fill up the metre, and are not translated.

Several old oblique forms will be found noted in these songs. . . .

The first three songs are specimens of those sung at marriages.

॥ १ ॥ मंगल ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2,+ 4 + 4 + 4 = 28 *instants.)*

सुभ होहुँ सुभ होहुँ, सुभ होहुँ मगंल।
सुभ होहुँ सीता के बियाह है॥ ॥१॥
सुभ होहुँ, सुभ होहुँ, सुभ होहुँ परिछन।
सुभ होहुँ बर जनवास है॥ ॥२॥
सुभ होहुँ, सुभ होहुँ, सुभ हुँ चुमवन ।
सुभ होहुँ मण्डप आजु है॥ ॥३॥
सुभ होहुँ, सुभ होहुँ, सुभ होहुँ बन्दन।
सुभ होहुँ बन्दनिहार है॥ ॥४॥
सुभ होहुँ दुलहा ओ सुभ होहुँ दुलहिन ।
सुभ होहुँ धियां के सुहाग है॥ ॥५॥
सुभ होहुँ समधि ओ सुभ होहुँ समधिन।
सुभ होहुँ सकल समाज है॥ ॥६॥
सुभ होहुँ ब्राहमन ओ सुभ होहुँ नउवा।
सुभ होहुँ नहछु तोहार है॥ ॥७॥

सुभ होहुँ नैहर ओ सुभ होहुँ सासुर।
सुभ होहुँ वर के विलास है॥ ॥८॥
अम्बिका प्रसाद नित सुभहि मनावत।
सुभ होहुँ कन्या के सोहाग है॥ ॥९॥

A Blessing sung at Marriages[1]

1. May the marriage of Sita be thrice happy and auspicious.

2. Thrice happy be the *parichhan*,[2] and happy be the bridegroom and his party.[3]

3. Thrice happy be the scattering of rice,[4] and happy be the marriage canopy[5] to-day.

4. Thrice happy be the offering of garments,[6] and happy be the offerer.

5. Happy be the bridegroom, and happy be the bride, and happy be the married life of the damsel.[7]

6 Happy be the father-in-law,[8] and happy be the mother-in-law, and happy be the whole assembly.

7. Happy be the brâhman, and happy be the barber.[9] Happy be the ceremony of the cutting of thy nails.

8. Happy be the house of the bridegroom's father, and happy be that of the father of the bride. Happy be the bridegroom's honeymoon.

9. Ambikâ Prasâd[10] prays continually in the morning[11] that the married life of the damsel may be happy.

[1] Marriage songs are generally written as if intended for recital at the marriage of Râm and Sítá or of Mahádeb and Gaurí. In the present one the bride is called Sítá.

[2] *Parichhan* is the ceremony performed when the bridegroom leaves his own house for the bride's, and also when he arrives at the latter.

[3] जनवास is the place set apart for lodging the bridegroom's companions.

[4] चुमवन is a ceremony in which the bride and bridegroom are worshipped, while the female members of the household scatter rice over them.

[5] मण्डप is the thatch or canopy raised in the courtyard under which the marriage ceremony takes place.

[6] बन्दन is a ceremony in which the elder brother of the bridegroom offers ornaments and garments to the bride.

[7] धी means daughter: धिया is either the oblique form or the long form of the word.

[8] There is no word in English to express the relationship involved in the word सम०धी (*fem.* सम०धिन). When two persons are married, the father of one is *sam'dhi* to the father of the other.

[9] A barber cuts the nails of the bride and bridegroom just before the marriage. This ceremony is called *nah'chhu*.

[10] This is the name of the poet. Custom dictates that the last line of every poem, called the *bhanita*, should contain the name of the author.

[11] सुभहि is an old locative form. This old form in हि is common in poetry. Its use is not, however, confined to the locative.

॥ २ ॥ मंगल ॥

(Metre. 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 instants)

पाँच सोहागिनि परिछन चलली। ए
चौमुख दीया सन्हारि हे॥ ॥१॥
पाँच सोहागिनि चुमवन चलली।
गौरि गनेस मनाइ हे॥ ॥२॥
पाँच सोहागिनि खीर खियावत।
गावत मंगल गान ह॥ ॥३॥
पाँच सोहागिनि उबटन करहीं।
राम सिया बैठाइ हे॥ ॥४॥
पाँच सोहागिनि भुखन पहनावत।
राम स्वरूप निहारि हे॥ ॥५॥
पाँच सोहागिनि करत ठठोली।
कहूँ पिता जि के नाम हे॥ ॥६॥
रिद्धी बिहँसि कहत राखियन तें।
कैसे कइस पितु नाम हे॥ ॥७॥
सिंगी रिखि आए खीर खियाए।
तबहि भइलें चारों भाइ हे॥ ॥८॥
माता इन्ह के बड़ि रंग रसिया।
पिता कवन परमान हे॥ ॥९॥
बहिनी इन्ह के मुनि संग रसली।
तेहि से कहत लजात हे॥ ॥१०॥
गाली सुनि सभ लखन बिहँसले।
रोरे ऐसन मोरि माइ हे॥ ॥११॥
बहिनि के लछन सभ रौरा जानेली।
उन्ह के ऐरान इ सुझाव हे॥ ॥१२॥
पिरिथवि से जे इहे सीता जनमलि।
पिता जन कैसे नाम हे॥ ॥१३॥
पिता हमार बिदित सभ जानत।
दसरथ हवे जे के नाम हे॥ ॥१४॥
अम्बिका कहत लखन सुनि लीजे।
धन धन मातु तोहार हे॥ ॥१५॥

The Same

1. Five matrons arranged the lamp with four wicks, and went to perform the *parichhan.*[12]

2. Five matrons invoked Gauri and Ganes and went to perform the *chumawan.*[13]

3. Five matrons fed the bridegroom with rice and milk as they sang auspicious songs.

4. Five matrons seat Rám and Sítá and apply odorous paste to their bodies.

5. Five matrons are apparelling him with ornaments while they gaze upon Rám's beauty.

6. Five matrons are jesting with him, saying "Tell[14] us the name of your father."

7. Siddhí[15] laughs and says to her comrades, "How can he tell the name of his father?"

8. "Saint Sringi came and gave rice and milk (to the wives of Rám's father), and that is how the four brothers came to be born."

9. "His[16] mother was a great *rang rasiyí*[17] : what certainty is there as to his father?

10. "His sister went wrong with a saint, and consequently he is ashamed to mention her."[18]

11. When Lakhan[19] heard this abuse, he laughed, and said. "Yea, such was my mother."

12. "And you know the peculiarities of my sister; such indeed was her nature."

13. "But this Sítá here was born from the earth.[20] What name has her father got?

14. "Everyone in the world knows my famous father: name is Das'rath."

15. Ambikí says, "O Lakhan! pay attention:[21] blessed, blessed is your mother."

[12] See note 2, page 368, and note 4, page 368.

[13] See note 4.

[14] कहहु is an old form of कहह.

[15] Siddhi was the wife of Sítá's brother.

[16] इन्ह कें in this and the following verses is a dative of possession. . . .

[17] A term for a woman of bad character.

[18] At marriage it is the privilege of the female relations of the bride to abuse the bridegroom. This is considered a great joke.

[19] Rám's brother. भारि is a genitive feminine. . . .

[20] Sítá was found in an egg which was ploughed up out of a field by king Janak.

[21] सुनि is an old form of सुन, the first verbal noun of ✓ सुन, 'hear'. लीजे is an old form of the precative imperative of ✓ जे, 'take'. The whole forms an intensive compound. . . .

॥ ३ ॥ कन्या निरिच्छन ॥

(*Metre:* 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 *instants.*)

धन धरि, धन दिन, धन हवे साइत।
हदे सीता देइ के भाग है ॥ ॥१॥
ब पितर रिखि किरिया जे कइले।
बन्दत सीता के लिलाट है ॥ ॥२॥
दधि अच्छत लेइ सीता के चढ़ावत।
गौरि गनेस मनाइ है ॥ ॥३॥
भुखन बसन लेइ सिया के चढावत।
सखि सभ गावत गान है ॥ ॥४॥
बेद उचारत बन्दिगन गावत।
सकल करहिं असिर्बाद है ॥ ॥५॥
अम्बिका प्रसाद सिया राम बर पाए।
जुग जुग बाढे अहिवात है ॥ ॥६॥

The Welcome[22] *of the Bride*

1. Auspicious time, the day, the hour; auspicious is the lot of the lady Sítá.[23]

2. By the mercy of the gods, the heroes,[24] and the saints, we adore the brow of Sítá.

3. After adoring Gauri and Ganes we take curds and rice and apply them to Sítá (forehead).

4. We also apparel her[25] in ornaments and garments, while all her bridesmaids sing marriage songs.

5. They are chanting the Beds, while bards sing her praises and everyone offers[26] her their benediction.

6. Ambiká Prasád (says) now that Sítá has obtained Rám for a husband, may her happiness increase through endless ages.

Next are a number of songs appropriate to certain seasons. The first two are poetic descriptions of the twelve months of the year—a class of poem very common throughout the whole of Northern India.

[22] निरिच्छन is the welcome of the bride at the husband's house by the women of the family throwing rice on her.

[23] See note 1

[24] *Literally*, 'deified progenitors'.

[25] *Siyá* is another form of Sítá.

[26] करहिं is an old Bihárí form for करन.

॥ ४ ॥ बारह मास ॥

(*Metre:* 6 + 4 + 4, + 6 + 4 + 1, *twice* = 50 *instants.*)

चन्दन रगरौं सोहासित हो, गूँधो फूल के हार।
इंगुर मँगियाँ भरइतौं हो, सुभ के मास असाढ ॥ ॥१॥
साँवन अति दुख पावन हो, दुख सहलो नहिं जाय।
इहो दुख परे ओहि कुबरी हो, जिन कन्त रखले लोभाय ॥ ॥२॥
भादौं रैनि भयावन हो, गरजे मेह घहराय।
बिजलि चमक जियरा ललचे हो, केकरा सरन उठ जाय ॥ ॥३॥
कुँआर कुसल नहिं पाओं हो, ना केऊ आवें ना जाय।
पतियां में लिख लिख पठबौं हो, दीहै कन्त का हाथ ॥ ॥४॥
कातिक पूरन मासी हो, सभ सखि गंगा नहाय।
गंगा नहाय लट झूखे हो, राधा मन पछताय ॥ ॥५॥
अगहन ठाढ़ि अँगनवा हो, पहिरौं आगरा के चीर।
इहो चीर भेजे मोर बलमुआ हो, जीए लाख बरीस ॥ ॥६॥
पूसहि पाला पर गैल हो, जाड़ा जोर बुझाय।
नौ मन रुइयां भरइतौं हो, बिनु सैंयाँ जाड़ो न० जाय ॥ ॥७॥
माघहि के शिव तेरस हो, शिव बर होए तोहार।
फिर फिर चितबौं मँदिरवा हो, बिनु पिया भवन उदास ॥ ॥८॥
फागुन पूरन मासी हो, सभ सखि खेलत फाग।
राधा के हाथ पिचकारी हो, भर भर मारेलि गुलाल ॥ ॥९॥
चैत फूलें बन टेसू हो जब के टुण्ड हहराय।
फूलत बेला गुलबवा हो, पिया बिनु मोहि न० सहाय ॥ ॥१०॥
बैसाखहि बसवा कटइतौं हो, रच के बँगला छँवाय।
ताहि में सोइतै बलमुआ हो, करतौं अचरनवैं झाड ॥ ॥११॥
जेठ तपे मिरग हवा हो, बहे पवन हहाय।
भरथरि गावे बारह मासा हो, पूजे मन के आस ॥ ॥१२॥

A Song of the Twelve Months

1. Gladly would I rub sandal paste upon my body and weave a garland of flowers. The parting of my hair would I have rubbed with vermilion in the happy month of Asárh.

2. The month of Síwan is a fire of exceeding sorrow, which cannot even be borne. May this sorrow be the lot of *Kub'rí*,[27] who has captivated my love.

3. In *Bhádaũ* the nights are fearful; the clouds thunder and roar and the lightning flashes: so my heart yearns for him. To whom can I go for refuge?

4. In *Kuár* (*Asin*) I get no good news: no one comes or goes. Writing, writing on a letter will I send it. Give it, I pray, into my love's hand.

5. At the full moon of *Kátik* all my comrades bathe in the Ganges. After the bath their hair[28] hangs down (to dry), while (I) Radha alone lament.

6. In *Ag'han* I put on a cloth of Agra and stand in my courtyard. This cloth was sent me by my husband. May he live ten thousand years.

7. In *Pus* snow has fallen, and the cold makes its power known. Even if I filled my quilt with nine *mans* of cotton, the cold will not depart in the absence of my lord.

8. The thirteenth of *Mágh* is the feast of Siw: may the blessing of Siw be upon thee. Whene'er I turn and gaze upon my dwelling (I see that) without my love my home is full of gloom.

9. On the full moon of *Phágun* all my comrades sport in the *holi*, and Radha is casting about red water from her syringe.[29]

10. In *Chait* the *Palás-trees*'[30] are flowering in the forest and the barley crop[31] is whispering (in the wind); the jasmine and the rose are blooming, but without my love they please me not.

11. In *Baisákh* I would have cut bamboos and adorned and roofed a bungalow. My husband would have slept in it, while I fanned him with the end of my body-cloth.

12. In *Jeth*, and specially in (the asterism of) Mirag, there is a wind which howls. The hope of her soul is fulfilled, and Bhar'thari sings this song of the twelve months.

[27] The speaker likens herself to Rádhá, the beloved of Syám (or Krishna), and is tortured by jealous fears. Kub'rí was a hunchback girl whom Krishna also loved and whom he made straight. She lived in Mathurá, while Rádhá lived in Brindában. A similar reference is male to Kub'rí in verse 3 of the next song.

[28] लट means the long hair of the head.

[29] At the holí festival it is customary to throw about red powder, and to squirt red liquids on passers by, as in the carnival in Europe.

[30] टेसू is the red flower of the palás-tree (*Butea frondosa*).

[31] टुङ is literally a tree or plant.

॥ ५ ॥ बारह मास ॥

(*Metre:* 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 *instants.*)

चेत मास मोहि मदन सँतावे।
बैसाख दैव दुख दाई ॥ ॥१॥
जेठ मास तन तपत धूप मैं।
कह ब्रिकभान दुलारी ॥ ॥२॥

(*Metre:* 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 *instants.*)

कौन उपाइ करौं मोरि आली।
स्याम भैल कुबरी बस जाइ ॥ ॥३॥
चड़त असाढ़ घन घेरि ऐले बदरा।
साओन मास बहे पुरवाई ॥ ॥४॥
भादौं अगम डगरिया ना सूझे।
जल सैं भरि गैले ताल तलाई ॥ ॥५॥
आसिन मास सरद रितु आइल।
कातिक में सखि लीन रजाई ॥ ॥६॥
अगहन अधिक कलेस स्याम बिनु।
नैहर सैं हम सासुर जाई ॥ ॥७॥
पूस मास सखि परत तुखारी ।
माघ पिया बिनु जाड़ो न जाई ॥ ॥८॥
फागुन का संग रंग हम खेलब।
सूर सियाम बिनाँ जदुराई ॥ ॥९॥

The Same

1. "In the month of *Chait* love tortureth me, and will continue, O Heaven! to do so till the end of *Baisákh.*

2. "In *Jeth* my body is fevered in the sunshine," saith (Rádhá,) the beloved daughter of Brik'bhín.

3. "O my friend[32] what device shall I use, for Syam hath fallen under the influence of Kub'rií?[33]

4. "*Asárh* beginneth, the clouds thickly cover the sky, and the east wind bloweth in *Sáon.*

[32] आली means 'a female companion', it is a feminine word: hence मोरि is feminine.
[33] See note 27.

5. "*Bhádaũ* approacheth, and the paths are no longer seen: the lakes and ponds are filled with water.

6. "With the month of *Asin* the autumn season came; in *Kātik*, O friend! I took to myself[34] a cotton coverlet.

7. "In *Ag'han*, without Syám great are my troubles: let me go to my father-in-law's house from my parents'.

8. "In *Pus*, O friend! the dew falleth, and in *Mágh*[35] without my beloved the cold leaveth me not.

9. "In *Phágun* with whom shall I sport (at the *holi*,) without Syám Jadurái, O Sur Dís?"[36]

The following songs are sung in the month of Chait. Many of them refer to the well-known legends about Krishna's boyhood amongst the cowherds of the Doab, between the Ganges and the Jamuna. The first three are examples of this class of legendary songs.

॥ ६ ॥ चैतार (घाँटो)[37] ॥

(*Metre:* 6 + 4 + 2, + 6 + 4 + 1, *twice* = 46 *instants*.)

रामा एहि पारे गंगा ओहि पारे जमुना हो राम।
तेहि रे बीचे किश्रन खेलले, फूल गेंदवा हों राम॥ ॥१॥
रामा गेंदा जब गिरले, महाँ खरवा हो राम।
तेहि रे बीचे किश्रन खिललें, रे पतालवा हों राम॥ ॥२॥
रामा लट धुने केसिया, जसोमति मइया हो राम।
एही रे दहे मानिक, हमरो हेराइल हों राम॥ ॥३॥
रामा गोड़ तोहि लागौं, केवट मल्हवा हो राम।
एही रे दहे डारहु, रे महाजलवा हो राम॥ ॥४॥
रामा एक जाल बिगले, दोसर बिगले हो राम।
बाझी गैल गैल घोंघवा, रे सेवरवा हो राम॥ ॥५॥
रामा पैठि पताला, नाग नाथल हो राम।
काली फन फन निरते, नाच कइलन हों राम॥ ॥६॥

[34] लीन is Braj for लेतीं.

[35] According to all native opinion *Mágh* is the coldest month in the year, both in Bihár and in Bangál.

[36] The name of the poet.

[37] This class of song is called indifferently a *chaitár* or a *ghato*.

रामा दास बुधिया सभ, घाँटो गावल हो राम।
गाइ रे गाई बिरहिन, सखि समुझावल हों राम॥ ॥७॥

A Song sung in the month of Chait[38]

1. O Ram !-On this side is the Ganges and on that the Jamuní, and between Krishn plays with a ball of flowers.

2. O Ram ! When the ball fell into the midst of the river,[39] into it dived Krishn down to Hades.

3. O Ram ! His mother Jasomati beats her locks and hair, (crying) "In this whirlpool my jewel has been lost."

4. "O Ram ! I clasp thy feet. O Kewat sailor! Cast thy largest net into the whirlpool."

5. O Ram ! He cast one net and then another, and it caught nothing but snails and water-weeds.

6. O Ram ! (But Krishn, who) had dived as low as Hades, bored the nose of the serpent Kálí and danced ceaselessly on his expanded hood.

7. O Ram ! Your servant, according to his knowledge, sang this song, called a ghāto, and as he did so consoled the damsels deserted by Krishn.

॥ ७ ॥ चैतार ॥

(*Metre:* 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 4 = 34 *instants.*)

छोटि मोटि ग्वालिनी अति बड़ि नाजुक। हो रामा।
चलि रे भैलि मथुरा नगर दहि बेँचन हो रामा॥ ॥१॥
एहि पार गंगा ओहि पार जमुना हो रामा।
ताहि रे बीचे काँधा मोरा धरला अँचरिया। हो रामा॥ ॥२।
छांड० छांड० काँधा हमरि अँचरिया। हो रामा।
परी रे जइहैं दहिया के छिटकवा। हो रामा॥ ॥३॥
तोरा लेखे ग्वालिनि दहि के छिटकवा। हो रामा।
मोरा रे लेखे चन्दन अतर गुलबवा। हो रामा॥ ॥४॥

[38]This song narrates how Krishna leaped into a whirlpool of the Jamuná and destroyed the snake Kálí by crushing its heads under his feet as he danced on its hoods. In this song several antepenultimate syllables, which should have been shortened . . ., have been allowed to remain long for the sake of metre.

[39]खरवा is long form of खार,'a deep hole full of water'.

The Same

1. The young[40] milkmaid, so very delicate, started for Mathura to sell curds.

2. On this side was the Ganges and on that the Jamuna, and between the two Krishn seizes hold of the border of my cloth.

3. "Let go, O Krishn! my cloth, or drops of curd will fall upon you."

4. "O milkmaid! You may consider them as drops of curds, but in my opinion they are spot of sandal, otto, and rose-water."

॥ ८ ॥ चैतार ॥

(*Metre irregular.*)

ए री बाजेला बसुरिया, हो रामा।
ए री मधुवनवाँ ॥ ॥ १ ॥
ए री सखियाँ बिरह के माती।
तजि दिहलीं भवनवाँ, हो रामा ॥ २ ॥

The Same

1. (O Ram!) (Krishn) plays his flute in Madhuban.

2. (O Ram!) The damsels that bear him company, maddened by the separation from him, have left their homes.

The following are other examples of songs sung in the month of Chait:

॥ ९ ॥ चैतार ॥

(*Metre*: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 3 = 27 *instants.*)
(*Refrain:* 3 + 6.)

Refrain: मोरे रामा हो ॥

पिअरी नाहीं पहनौं रामा।
मोरे चैत के बहार ॥ ॥ १ ॥
खासा पहनौं रे मखमलवा।
चोलि पहनौं बुटेदार ॥ ॥ २ ॥

[40] मोटि is only a rhyming repetition of छोटि.

The Same

Refrain—*O My Rim!*

1. I put not on, O Ram ! my yellow (dress) in the happy month of Chait.
2. Muslin I put on, and velvet, and a variegated bodice.

॥ १० ॥ चैतार ॥

(*Metre* 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 *instants.*)

(*Refrain:* 6 + 4 + 4 + 2.)

फुलवा लोढ़ि लोढ़ि भरलों चँगेरिया। ॥हो राम॥
आइ गैल मलिया रखवरवा॥ ॥हो राम॥ ॥१॥
देवउ रे मलिया ने डाल भर सोनवाँ। ॥हो राम॥
सैयाँ आगे जनि लाइया लइह०॥ ॥हो राम॥ ॥२॥

The Same

Refrain—*The Jasmine flowers in the nonth of Chait*

1. Gathering, gathering flowers I filled a basket, when up came the guardian *máli*.
2. I will give you, O *máli* ! a full basket of gold, but do not lay a slander[11] (against me) before my husband.

॥ ११ ॥ चैतार ॥

(*Metre irregular.*)

Refrain—ए री चलू सखि सखि मलिया घन रगिया, हो रामा।

ए री फुलवां मैं लोरही लोरही।
भरलों चँगेरियो, हो रामा॥ ॥१॥
आइ गइले हो बावा के रखवरवा, हो रामा॥ ॥२॥
ए रे सुनु सुनु मलिया छोकरवा।
हारे बारि रे बइसवा, हो रामा॥ ॥३॥
अरे जब हम जइबाँ ससुरवाँ।
बरिया सपनवा, हो राम॥ ॥४॥

[11] लइया is long form of लाई 'slander'.

The Same

Refrain—*O friends! let us come to the dense orchard*[42] *of the gardener*

1. Plucking, plucking flowers, I filled my basket.
2. The watchman of my father came up.
3. 'O gardener's son ! hear me. I am small[43] and of tender age.
4. 'When I go to my husband's house, this garden[44] will be like a dream to me.'

॥ १२ ॥ चैतार ॥

(*Metre:* 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 *instants, with refrain* हो राम *which sometimes forms part of the metre and sometimes not.*)

ननदि अँगनवा चनन गाछ बिरवा। हो राम।
ताहि चढ़ि बोले बन कगवा, हो रामा ॥ ॥१॥
"देवरु रे कगवा रे दूध भात कवरवा। हो राम।
मोरा पिया के सुधि बताइ दे, हो रामा" ॥ ॥२॥
"पिया पिया जनि करू पिया के सोहागिनि। हो राम।
तोरो पिया लुभुधल बारि तमोरिनि ॥हो रामा' ॥ ॥३॥
"कैसन हइक रे देसवा मुलुकवा। हो राम।
कैसन हइक रे बारि तमोरिनि ॥हो राम' ॥ ॥४॥
"अँगिया के पातर अरे मुख दुरहुर । हो रामा।
केसियन भौंरा गूँजरि गैल रामा' ॥ ॥५॥
"धोरबों मुहुरवा अरे बिख खाइब। हो राम।
मोररा आमे उड़रि के कैल बड़इया ॥ हो राम' ॥ ॥६॥
दास बुलाकि समैया घाँटो गावल। हो राम।
(गाइ रे गाइ)
बिरहिन सखि समुझावल, हो रामा ॥ ॥७॥

[42] बगिया the long form of बाग 'a garden', usually means 'an orchard'.
[43] हारा means 'small' (of a person).
[44] बरिया is long form of बारी, 'a garden'.

The Same

Refrain—*Ah Rám!*

1. In my sister-in-law's yard is there a sandal-tree,[45] and upon it sits and caws a forest crow.

2. "I will give thee, O crow! a morsel of milk and rice if thou wilt give me news about my love."

3. "Sweetheart of thy beloved! say not 'beloved, beloved,' for thy beloved also hath fallen captive to a young *tamorin.*"[46]

4. "Alas ! what is that country and that land like, and what the young *tamorin?*"

5. "Her body is delicate and her face is fair, and bumble bees keep humming round her hair (so sweet is it)."

6. "Poison[47] will I pound, and venom will I eat, for he hath set that wanton before me."

7. Dás Bulaki sang this ghâto at a fit season, singing it, singing it, and her friends consoled the deserted one.

११३ ॥ चैतार ॥

(*Metre*: 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2, *with refrain* हो रामा.)

ननदि के अँगना चनन घन गछिया। हो रामा।
तहि चढि बोलेला कगवा छुलच्छन ॥ हो रामा ॥ ॥१॥
"देबउ रे कगवा, दूध भात दोनिया। ॥हो रामा ॥
खबरि ना ला दे बालम परदेसिया" ॥हो रामा ॥ ॥२॥
"पिया पी जनि करू, पिया के सोहागिनि। हो रामा।
तोर पिया अरुझल बारि बंगालिनि" ॥हो रामा ॥ ॥३॥
"तोहि पूछौं कागा अजगुत बतिया ॥हो रामा ॥ ॥
कौना रूपैं सुन्दरि बारि बंगालिनि" ॥हो रामा ॥ ॥४॥
"डँडवा के पातर अरे मुख दुरहुर। हो रामा।
केसियन मैं भँवरवा गुँजारल" ॥हो रामा ॥ ॥५॥
"काढि रे कटरिया अपन जिया मारितों हो रामा।
उढरि के करेले अति से बखनवा" ॥ हो रामा ॥ ॥६॥

[45] गाछ and बीरा (long form बिरवा) both mean 'tree'.
[46] A woman who sells betelleaves.
[47] मुहुर [माहुर] is 'poison'. ✓घोर means 'pound'.

The Same

Refrain—*Ah Rám!*

1. In my sister-in-law's yard is there a thick sandal-tree and upon it sits and caws a crow with lucky marks.

2. "I will give thee, O crow! a leaf platter of milk and rice if thou wilt bring me news of my beloved in a foreign land."

3. "Sweetheart of thy beloved ! say not 'beloved' or 'loved one:' thy beloved is entangled with a young Bangálin."

4. "I ask thee, O crow! a strange matter. In what feature is the young Bangálin beautiful?"

5. "Slender of loin is she, and beauteous is her face: bees hum about her hair."

6. "I would draw a dagger and take away my life, for thou dost praise exceedingly that wanton one."

The above two songs refer to a tradition about crows. Their 'caw' is said by natives to be "ठाँयए, ठाँय"; meaning "place, place". Hence they are supposed to be able to answer any question as to the *place* where any person is, such as, "where (कोन ठाँय) is my beloved?"

॥ १४ ॥ चैतार (बिहागरा) ॥

(Metre irregular)

मानल सैयाँ रुसि गैले बौरी।
कोइली हो तोरि बोलियन ॥ ॥१॥
ए री अहि रात अगलि पहर रात पिछिलि।
कोइलो हो तोरि बोलियन ॥ ॥२॥

The Same

1. O cuckoo![48] at thy notes my husband, who loved me, has gone mad and has become displeased with me.

At thy notes. O cuckoo! when the first half of night had passed and the first quarter of the second half had commenced.

[48]The note of the cuckoo is supposed generally to be a great incentive to love. Here the wife complains that it has had a contrary effect.

॥ १५ ॥ चैतार ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 *instants.)*

(Refrain: 4 + 4 + 4 = 12 *instants.)*

Refrain—ननदि सैंया नहिं आवे ।।

अँमवा मँजरि गैले, लगले टिकोरवा ।
डाल पता झुकि मतवलवा ॥ ॥१॥
चोलिया से जोबना बड़ भैलि ननदि ।
कैसे करि के छिपाओं ॥ ॥२॥

The Same

Refrain—*O sister-in-law ! my lord comes not*

1. The mango-trees are in blossom, and the young mangoes are forming: the branches and leaves hang down as if they were intoxicated.

2. (The fullness of) my youth cannot be contained within my bodice: how can I conceal it?

॥ १६ ॥ चैतार ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 *instants.)*

भावे नाहीं मोहि भवनवाँ ।
हो रामा, बिदेस गवनवाँ ॥ ॥१॥
जाँ एह मास निरास मिलन भए ।
सुन्दर प्रान गवनवाँ ॥ ॥२॥
केसो दास गावे निरगुनवाँ ।
ठाढि गोरि करे गुनवनवाँ ॥ ॥४॥

The Same

1. Ah Rām ! on (my[49] husband's) going abroad, my home did not please me.

2. If this month I become[50] hopeless of meeting him again, my beautiful life will depart.

[49] Lengthened from मोहि for sake of metre.
[50] Old form of होए.

3. Keso Dás, the unworthy, says, "The fair one stands as she utters his praises".[51]

॥ १७ ॥ चैतार ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2 x 2 = 32 *instants.)*

नइ रे नवेलि अलबेलि बौराही।
उधकत उधकत चलालि अँगनवाँ ॥ ॥१॥
खन आँगन खन बाहर ठाढ़ि रे।
जोहे लागे जोहे लागे सैंयाँ के अवनवाँ ॥ ॥२॥
जिन्हि मोरा कहे रामा सैंयाँ के अवनवाँ।
ननदि हो तिन्हि देबौं कंचन कँगनवाँ ॥ ॥३॥

The Same

1. A fresh, young, and coquettish maiden, yet mad with love, walking at random,[52] went into the courtyard.

2. Sometimes she stands in the court and sometimes outside, and begins to watch, to watch, for the coming of her lord.

3. "O sister-in-law! to him who tells me (Ah Rám!) of the coming of my lord, will I give a golden bracelet."

॥ १८ ॥ चैतार ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 +2 + 6 x 2 = 44 *instants.)*

देवरा चौरा रे लुटल० जोबनवा, हो रामा ॥
गरमि का कसमास सुतलौं अँगनवा, हो रामा ॥ ॥१॥
नान्ही से मैं पोसलौं देवरवा, हो रामा।
दुधवा पियउलौं से ओ देवरवा, हो रामा ॥ ॥२॥
लुलुहा कटइतौं फँसिया दिअइतौं, हो रामा।
जोहूँ घरवा रे रहित बलमुआ, हो रामा ॥ ॥३॥

[51] गुनबन is said to mean 'praises', 'a telling of virtues'. It is a corruption of गनन, lit. a 'counting', 'an appraisement'.

[52] उधकल is literally 'to jump'.

The Same

Refrain—*Ah Rim!*

1. Thou thief, my husband's younger brother,[53] thou hast plundered my youth[54] (when) I slept in the court-yard on account of the excessive[55] heat.

2. O brother in law! from your childhood have I cherished you and given you milk to drink.

3. Had my husband been at home, I would have had you maimed and got you hanged.

The following is a specimen of the songs sung in the rainy season:

॥ १६ ॥ बर०साती गीत ॥

(*Metre irregular*)

मोरे टोपिवाला बारे भींजत होइयौं।
ओहि गुलबदनि का साथ ॥ ॥१॥
आठहि काठ के हिंडोरवा हे रे लागि डोर ।
झूलति मैं अपना रे बालम संगे।
अब दुख सहला न० जाय ॥ ॥२॥

A Song of the Rains

(A wife expresses her fear that her husband, who has deserted her for another is out in a rain-storm.)

1. My young husband[56] may even now be wet through and through with that rose-bodied one.

2. (Had he been here) I would have now been swinging in the company of my beloved, after affixing strings to a cradle of eight pieces of wood. Now my woes are not even endurable.

The following four songs are examples of those sung by women when sitting at the hand-mill. They are always sung to a very plaintive melody:

[53] A wife may speak to, and joke with, her husband's younger brothers, but not to his elder ones.

[54] जोबना, literally 'youth', commonly means the fulness of a young woman's bosom. Of song 15, line 2, and song 22, line 2.

[55] कस०मास is literally 'tightness', as of clothes: hence, when applied to heat, 'excess'.

[56] *Literally* 'hat-wearer', a term of affection.

॥ २० ॥ जतसार ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 *instants.)*

(Refrain: 4 + 4 + 4 = 12 *instants. Chorus* हो रामा)

Refrain: ससुरा कैसे जाइब ॥ हो रामा ॥

नइहरा मैं कछु ढंग नहिं सिखलों।
पियवा के नइयाँ भुलाइल ॥ हो रामा ॥ ॥१॥
राग के सहेलिया सेहो भैले मुदई।
अपने ना कछुवो बुझाइल ॥ हो रामा ॥ ॥२॥
बड जेठा के कहना ना कइलों।
जोवना के मद बउराइल ॥ हो रामा ॥ ॥३॥
अम्बिका कहत गौरि चेत करह अब।
गवना के दिन नियराइल ॥ हो रामा ॥ ॥४॥

A Song of the Hand-Mill

(A pathetic song sung while women are grinding corn.)

Refrain—*How can I go to my father-in-law's house?*

1. I learned no method in my father's[57] house. I forget even thy name of husband. (Ah Rámá!)

2. Even the companion of my fellowship has become my enemy, and I myself was not understood.[58] (Ah Rámá!)

3. I acted not according to the advice of my elders, and I raved in the intoxication of my youth. (Ah Rámá!)

4. Ambiká saith, O fair one! Take thought now. The day of thy departure (to thy husband's house) is at hand

॥ २१ ॥ जतसार ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 3, + 2 = 29 *instants.)*

Refrain—बेरि बेरि जालें सैंयाँ पुरुबि बनिजियाँ। कैसे कटे दिन रात हो॥

गाडि जे अटकेला चहल पहल में।
बैल अटके गुँजरात हो ॥ ॥१॥

[57] नइहरा is oblique of नइहर, 'the house of a bride's father'.

[58] Potential passive.

ई दुनु नैन बनारस अटके।
सैंयाँ जहानाबाद हो ॥ ॥२॥

तलवा में चमकेला चल्हवा मछरिया ।
रनवा चमके तरुवार हो ॥ ॥३॥

सभवा में चमकेला सैंयाँ के पगरिया।
सेजिया पे टिकुलि हमार हो ॥ ॥४॥

The Same

Refrain—*O my lord! often goest thou to the East to trade: how can the days and nights be passed?*

1. The cart gets stopped in the muddy plain, and the bullocks in Gujrát.

2. My two eyes (i.e. myself) stopped in Banaras, while my husband was in Jahánabád.

3. As the Chalh'wá fish shines in the lake, and as the sword shines in the battle,

4. So shines the turban of my lord in the assembly and the spangle (of my forehead) on the bed.

॥ २२ ॥ जतसार ॥

(Metre: (6 + 4 + 2) x 4, + 4 + 4 + 4 = 60 instants.)
(Refrain: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 instants.)

Refrain पिया बटिया जोहत दिन गैलो[59]। तोरि खबरियां न पाइलो।

केसिया अपने गुँधाईला
गोरे रौदुर गराईला।
पिया के सुरतिया लाईला।
जियरा हमर रुँधेल।[60]
नैनन निरया ढर गैलो ॥ ॥१॥

बाह्मन के बेदा बोलाईला।
पोथियां ओकर खोलाईला।

[59] गैलो, पाईलो, and भैलो, are altered from गैल, पाईला, and भैल [see lines 1, 7 and 14] respectively for the sake of rhyme.

[60] In रुंधेला, सुनावेला, and आवेला [see lines 3,6 and 9] the penultimate has been lengthened for the sake of metre.

साँचे सगुन सुनावेला।
पीवा नैखे आईला।
जोबन हमर बड़ भैलो॥ ॥२॥
नौआ के छाँड़ा बोलाईला।
पूरूब देसा पठाईला।
उत्तर भै के आवेला।
दखिन सुरत लगाईला।
पच्छिम घरे घरे ढुँढलौं॥ ॥३॥
गुरू तुकुन मनाईला।
साजन घरवा आईला।
खुब खुब भोज बनाईला।
साजन के जँवाईला।
राम मदारि गाईला।
लोगन के सुनाईला[61] ।
दुसमन सार जर गैलो॥ ॥४॥

The Same

Refrain—*My beloved, watching for thee,*[62] *the day has sped, nor I get news of thee.*

1. (Daily) do I tie up my hair and lay vermilion on its parting. I bring thee to my memory, but my soul is disappointed, and tears flowed from my eyes.

2. I call[63] a bráhman and make him open his books. He tells me some good (*lit.* true) omen, but my beloved comes not, while my youthful form[64] is growing.

3. I called the barber's son and sent him to the East country. He comes home by the north, while I seek through[65] the south and search in every house in the west.

4. I invoke Tukun, my preceptor. My good man comes home. Excellent food am I preparing that I may feed him withal. Rám Madári sang this, and told it to the people, while her enemy's soul is burnt up (with envy).

[61] In सूनाईला [see line 13] the first syllable has been lengthened for the sake of metre.
[62] *Literally*, 'watching the way', a common idiom. बटिया is long form of बाट (*fem*), 'a road'.
[63] *Lit.* 'I call the holy books (Vedas) of the brahman.'
[64] *Lit.*, 'youth'. [जोबन हमर बड़ भैलो.]The word is usually applied, as here, to a young girl becoming *apta viro*. Of. song 18, line 1.
[65] *Lit.*, 'apply my memory'.

॥ २३ ॥ जतसार ॥

(Metre: (6 + 4 + 2) x 4, + 4 + 4 + 4 = 60 *instants.)*

(Metre: founded on 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 *instants, but very irregular.)*

"सभ के नगरिया (चुरिला)[66] बँसिया बजावे राम।
हमरा नगरिया काहे ना बजावहु (रे की)" ॥ ॥१॥
"कैसे बजाईं (रानी) रौरि नगरिया रे।
कुकुरवा भूँकेला पहरू जागेला (रे की)" ॥ ॥२॥
"कुकुरा के देबौं (चुरिला) दूध भात खोरिया रे।
पहरू के मद मैं मतइबौं रे की" ॥ ॥३॥
"आधि रात अगिलि (ए रामा) पहर रात पिछलि रे।
दुआरा पै चुरिला रसिया ठाढ़े (रे की)" ॥ ॥४॥
"खोलू खोलू खोलू रानी संकरि केवरिया रे।
आइ गैले चुरिला रसिया रे की" ॥ ॥५॥
"कैसे मैं खोलौं रे (चुरिला) संकरि केवरिया रे।
अँचरा पै सूते राजा कूँवर (रे की)" ॥ ॥६॥
"तोहरा जे पास रानी सुबरन छूरिया रे।
अँचरा कलपि चलि आवहु रे की" ॥ ॥७॥
"अँचरा कलपत (चुरिला) बड़ निक लागे रामा।
मुँहवाँ देखत छतिया फाटेला (रे की)" ॥ ॥८॥
"एक कोस अइलौं (चुरिला) दुइ कोस आइलौं रे।
चलत चलत पैयाँ मोर थाकल (रे की)" ॥ ॥९॥
"चलहू चलहू (हे रानी) थोर केत रतिया रे
उहत जे लोके मोर धवरेहर (रे की)" ॥ ॥१०॥
"सूरज जे उगले (चुरिला) मुख चटपटवा रे।
गोड़वा चलत चलबज्जर रे की" ॥ ॥११॥
"बाट बटोहिया रे तुहुँ मोर भैया हव०।
देखल० कतहुँ तूँ चरिला धवरेहर (रे की)' ॥ ॥१२॥
"नाहिं हम देखलौं (हे बहिनि) कि नहिं हम सुनलौं हो।
कहवाँ तू सुनलू चुरिला धवरेहर (रे की)' ॥ ॥१३॥

[66] Words enclosed thus, in brackets, do not form part of the metre.

"देखलौं मैं देखलौं (ए बहिनि) हाजीपुर डिहवा रे ।
चुरिला के मैया सुअरि चरावेला (रे की)" ॥ ॥ १४ ॥
"जौं हम जानितो (चुरिला) जात के दुसधवा रे।
बाबा के नगरिया फँसिया दिअइतीं (रे की)" ॥ ॥ १५ ॥
"लट पट पगिया (चुरिला) लाँकीं लाँकीं केस्या रे।
गैरि सुरतिया हम भूलि गैलों (रे की)" ॥ ॥ १६ ॥
"साथहीं मैं खइलो (हें रानी) साथहीं मैं सुतलौं हो।
अब कैसे जातिया तोर मेराइब (रे की)" ॥ ॥ १७ ॥

The Same

1. "O Churilá! You play the flute in all the towns: why do you not in ours?"

2. "How can I play, fair lady, in your town? For the dogs bark there and the watchmen is vigilant."

3. "O Churilá! I will give the dogs a dish[67] of rice and milk, and the watchman will I make drunk with wine."

4. "When the first half of the night had passed and the first quarter of the second half had commenced, my lover Churilá stood by the door.[22]

5. "Open, open, fair lady, the narrow door: Churilá, thy gallant lover, has come."

6. "O Churilá! How can I open the narrow door? The prince (my husband) is sleeping on the border of my garment."

7. "Fair lady, you have a golden knife. Cut the cloth and come with me."

8. "O Churilá! As I cut the border it seems very pleasant to me, but when I look on (my husband's) face, my heart is bursting."

9. "O Churilá! We have come one kos,—we have come two: with continued walking my legs are weary."

10. "Fair lady, come on, come on; but little[68] of the night remains. My palace is but yonder."[69]

11. "O Churilá! The sun is risen, and my mouth is dry and my legs fail[70] me through weariness."

12. "O wayfarer on the way! Thou art my brother. Have you seen anywhere Churilá's palace?"

[67] खोरिया is a kind of small pot.
[68] *Lit.* 'how much': hence, 'how little'.
[69] *Lit.* 'that which appears (लोके) [लौके] there (उहत) is my palace'.
[70] *Lit.* 'are heavy in going'.

13. "Sister, I have neither seen nor heard of it. Where did you hear of Churilá's palace?"

14. "I have seen his sister in the village of Hájípúr, and Churilá's mother is a swineherd there."

15. "O Churilá! If I had known that you were a Dusádh by caste, I would have had you hung in my father's town."

16. "O Churilá! I forgot myself when I saw your swaggering turban your long, long hair, and your fair complexion."

17. "Fair lady, I have eaten and slept with you. How can I now restore[71] you to your caste?"

The following songs are known as jhúmars, which is a generic name for any song sung by women:

॥ २४ ॥ झूमर ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 = 30 *instants.*
First line has two extra instants in second half.)

मारत बा गरियावत बा, देख०।
(इहे) करिखहवा मोहि मारत बा॥ ॥१॥
आँगन कइलौं पानि भरि लइलौं।
ताहु ऊपर लुलुआवत बा॥ ॥२॥
अस सौतिन के माने माई।
हमरा बदइ बनावत बा॥ ॥३॥
ना हम चोरिनि ना हम चटनी।
झुठहु अछरंग लगावत बा॥ ॥४॥
सात गदहा के मार मोहि मारे।
अउर अस घिरिसिआवत बा॥ ॥५॥
देखहु रे मोर पार परोसिनि।
गाइ पर गदहा चढ़ावत बा॥ ॥६॥
पियवा गँवार कहल नहिं बूझत।
पनियाँ मैं आगि लगावत बा॥ ॥७॥

[71] मेराइब Hindi = मिलाऊँगा.

हे अम्बिका तुम बूझ करह अब।
अचरा उढ़ाई गोहरावत बा॥ ॥८॥

A Jhúmar
(A kind of song sung by women)

1. See how this black-faced one beats me, abuses me, beats me.

2. I cleaned up (*lit.* made) the courtyard and brought water. and still he chides me.

3. Thus does he regard, O mother! my co-wife, while he makes out evil (against) me.

4. I am not a thief nor a glutton, still he reproaches me falsely.

5. He beats me like seven donkeys, and drags me about as if I were a pig.

6. See, O my neighbours ! how he abuses me for no fault.[72]

7. My stupid husband does not understand what I say, and keeps trying to set water on fire.

8. O Ambiká! understand that he is blaming me openly.[73]

॥ २५ ॥ झूमर ॥ ✓

(*Metre:* 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 *instants.*)

अपना पिया के मैं खोजे ला निकसौं।
पैन्हि लेलौं रंग लाल चुनरइया॥ ॥१॥
गोकुल खोजलौं बिन्द्राबन खोजलौं।
खोजि ऐलौं हम कासि नगरइया॥ ॥२॥
जंगल खोजलौं पहाड़न खोजलौं।
कतहिं न० मिले मोर पिया के खबरिया॥ ॥३॥
अम्बिका पिया के घरहि मैं पाई।
मिलि गैल रे मन माहाने सुरतिया॥ ॥४॥

The Same

1. I put on a red cloth[74] and went to search for my husband.

2. I searched for him in Gokul I searched for him in Brindában, and returned after searching for him Kási (Banáras).

[72] *Lit.*' makes a donkey mount upon a cow', a proverbial idiom.

[73] *Lit.* 'spreading out his garments'.

[74] चुनरइया is an irregular long form of चुँदरि or चुनरि 'a woman's cloth', usually with coloured border.

3. I searched for him in the forest, I searched for him in the mountains, but nowhere could I find news of my husband.

4. O Ambiká! I found my husband even in my house, and I obtained soul-entrancing delights.

॥ २६ ॥ झूमर ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 2 = 27 *instants.)*

कवना गुनहि ए चुकलौं ए बालम।
तोर नयना रतनार ॥ ॥१॥
सौति के बतियाँ करेजवा मैं साले।
काँपत जियरा हमार ॥ ॥२॥
अपना पिया लागि पेन्हलौं चुँदरिया।
ताकत देवरा हमार ॥ ॥३॥
अम्बिका प्रसाद पिया हँसि हँसि बोलिहैं।
करबौं मैं सोरहो सिंगार ॥ ॥४॥

The Same

1. In what fault have I been wrong, beloved, for thine eyes are red?

2. The words of my co-wife pierce me to my liver: my soul is trembling.

3. I put on a bordered cloth[75] for my husband, and my brother-in-law[76] is gazing at me.

4. O Ambiká Prasád! when my husband will speak smilingly, I will adorn myself with the sixteen graces.

॥ २७ ॥ झूमर ॥

(Metre very irregular, founded on 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 *instants.)*

भैले भिनुसरवा बोलेला कोअलिया।
ऊठि साँवरि अँगनवा बुहारे। गे गोरियो ॥ ॥१॥
अँगना बुहारते टुटलैं बढ़निया।
बढ़नि के बड़ दुख भइल गे गोरियो ॥ ॥२॥

[75] See last song.
[76] See note 53.

अँगन धोरिये सास गरिया मारे।
बाबा खोखि भैया रोखि पुतहु बहोरिया। गे गोरियो ॥ ॥३॥
बढ़नि धोरने उदवासलि गे गोरियो।
बाट रे बटोहिया, तुहूँ मोर भैया।
हमरो सनेसवा लेले जाऊ गे गोरियो ॥ ॥४॥
तोहर भैया के चिन्हेलौं ना जानेलौं।
कैसे कहब समुझाय गे गोरियो ॥ ॥५॥
हमरा भैया के लाँब लाँब केसिया।
जैसे लागे मुगल पठानवा गे गोरियो ॥ ॥६॥
आगु आगु आवेला बढ़नि बोझैवा।
पाछु लाग आवे जेठा भैया। गे गोरियो ॥ ॥७॥

The Same

1. Morning dawned and the cuckoo sings; up rises the nut-brown maid and sweeps the courtyard. (O fair one!)

2. In the sweeping her broom broke, and for the broom great sorrow was there (in her heart). (O fair one!)

3. Her mother-in-law went about[77] the courtyard and abused her,[78] "You daughter-in-law, wife of my son,[79] you eater of your father, eater of your brother." (O fair one!)

4. For the sake of the broom she became mournful (O fair one!) (and cried) "O wayfarer on the way! Thou art my brother: carry news of me (to my elder brother)." (O fair one!)

5. "Your brother I nor recognize nor know: how shall I tell him and explain." (O fair one!)

6. "My brother has long, long hair, as if he were a Mughal or a Pathán. (O fair one!)

7. Before him comes a carrier of a load of brooms, behind whom comes my elder brother." (O fair one!)

I conclude with a few songs of miscellaneous character:

[77] धोरिये poetical for धोरि = Hindi घूर कर के.
[78] गारी पारल is the ordinary phrase for 'to abuse'. It is literally 'to throw abuse'.
[79] पुतह and बहोरी both mean 'a son's wife'.

॥ २८ ॥ समुझावनी ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 4 = 28 *instants.)*

जाहि दिन ए पिया धिया मोर जनमलि।
ताहि दिन भइलों उदास हे ॥ ॥१॥
बेटा रहित सेवा तोहि करिते।
बेटि पाहुन दिन चार हे ॥ ॥२॥
जँहिया बैसाइ पिया दान जब करिहौ।
तबइ जैहैं सासुरार हे ॥ ॥३॥
बेटी सेइ है सुहई कहिहैं।
तबहो पाउन हमार हे ॥ ॥४॥
पिया संग रसिहैं, पिया संग बसिहैं।
पिया संग रचिहै धमार हे ॥ ॥५॥
चार जना मिल डोलिया उठइहैं।
पीछे सकल बरियात हे ॥ ॥६॥
अम्बिका कहता माता धरु धीरज।
जग के इहै ब्योहार हे ॥ ॥७॥

A Song of Consolation

1. My husband, on the day when my daughter was born I became sad.

2. Had it been a son, he would have served you (in your old age), but a daughter is but a four-days' guest.

3. When, love, you will give her in marriage,[80] she will go to live in her father-in-law's house.

4. This our daughter they will call[81] 'the bride' in her husband's house, but a guest in ours.

5. She will enjoy life and sit with her husband: with him she will sing songs.[82]

6. Four men will together lift her litter, and the wedding party will follow her.

7. Ambiká saith, "O mother! have patience: this is the way of the world."

[80] जँघिया or जाँघा बैसावल refers to a marriage custom in which the daughter at the time of her marriage is made to sit on her father's thigh while he gives her hand to her husband.

[81] सुहई is the name given to the bride by the women of her husband's house.

[82] धमार is a festival song, such as is sung at the holí. धमार रचल is used idiomatically to mean living happily.

॥ २६ ॥ भजन ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2,+ 4 + 4 + 4 = 28 *instants.)*

(Refrain: 4 + 4 + 4 = 12 *instants.)*

Refrai: राम रस पी ले रे भाई।

मीठ मीठ सभ केऊ पीए।

कडुआ पिअलो न० जाई ॥ ॥१॥

जैसन रोगी नीम पिअतु है ।

आँखि मूँदि पिए जाई ॥ ॥२॥

सुने सौं गूँगा होई बैसे।

पीए से मरि जाई ॥ ॥३॥

एकतो पीए सन्त बिबेकी।

पिअत अमर होइ जाई ॥ ॥४॥

धूरब पीए पहलद पिअतु है।

पी गइल मीराबाई ॥ ॥५॥

दास कबीर जे अवर पिअतु है

जगवा मैं रहलो न० जाई ॥ ॥६॥

A Hymn

Refrain—*O brother ! drink the nectar of Rám.*

1. Everyone drinketh sweet things, but that which is bitter no one drinketh.

2. As a sick man drinketh the bitter juice of the ním-tree, so closing thine eyes (at its astringency) dost thou drink it.

3. From hearing (its virtues common men) turn deaf, and those who drink it die.

4. Only the holy and discreet can drink it; and when they do, they become immortal.

5. (Saints like) Dórab, Pah'lad, drink it; yes, Mírábáí hath tasted it.

6. If Kabír Dás drink more of it, he shall have to leave this world.

Note—This hymn contains many Hindí expressions. पिअतु is Braj for पीअत; अवर is Kanaují for और, 'and'.

॥ ३० ॥

नागरी अच्छर कचहरियों मैं चलित होने के विषय में सरकार की प्रशंसा

(पूर्वी गीत)

(Metre: 6 + 6, + 6 + 4 = 22 *instants.)*

धन्य धन्य गवरमिण्ट। परजा सुखदाई।
जामनी के दूर करी। नागरी चलाई॥ ॥१॥
भुवन देव करि पुकार। लाट ढिग्ग जाई।
परजा दुख दूर करह। जामनी दराई॥ ॥२॥
नाना बिधि जाल होत जामनी मैं राई।
परजा मन हरख हीत। बिद्या निज पाई॥ ॥३॥
धन बुद्दी धन बिचार। धन मन्तर भाई॥
करि नेआव हिन्द बीच। हिन्दुई चलाई॥ ॥४॥
परजा नित सुजस गाव०। अम्बिका मनाई।
जब ले चन्द सूर्ज रहे। राज रहे भाई॥ ॥५॥

A song praising Government for doing away with the Persian and substituting the Nágarí character.

1. Thanks be to the Government, which bestoweth happiness on its subjects. It hath put away the Persian[83] character and introduced Nágarí.

2. Bhuvan Deb[84] went to the Lord, and called out, saying, "Remove the sorrows of your subjects by removing Persian."

3. "In the Persian characters, O king, many forgeries take place. Joy will be in the heart of your subjects if they obtain their own national knowledge."

4. Thanks to the wisdom, thanks to the discernment: thanks, O brother, to the counsel which has done justice in Hind by introducing Hinduí.[85]

5. O people! Always sing the glory (of Government), while Ambiká prayeth that the reign of the mother (Victoria) may stand while the sun and moon endure.

[83] जामनी means the language and character of the Jabans or Mussalmáns. It is the ordinary Hindú name for Urdu, or even for Hindi as distinct from Bihari.

[84] *I.e.*, Babu Bhu Dev Mukharjyá, C.I.E., Inspector of Schools.

[85] हिन्दुई, *lit.* the language of the Hindus.

॥ ३१ ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 6 + 4 + 4 + 2 = 32 *instants.)*

(Refrain: 6 + 4 + 2, + 6 + 4 + 2 = 24 *instants.)*

Refrain: हुकुम भइल सरकारी। रे नर सीख० नगरिया ॥

जामनि जी से देहु दुराई।
पढ़ि गुन काज करह नरहरिया ॥ ॥१॥
ले पोथी नित पाठ करह अब।
जामनि ग्रन्थ देउ पैसरिया ॥ ॥२॥
जब ले नागरि आवत नाहीं।
कैथी अच्छर लिख० कचहरिया ॥ ॥३॥
धन मन्त्री परजा हितकारी।
अम्बिका मनावत राज बिकटोरिया ॥ ॥४॥

The Same

Refrain—*The Sarkar gave the order, 'O men, learn Nágarí.'*

1. Put away the Persian character from your heart, read and do pious action (at the same time) pleasing to God. (नरहरिया).

2. Take your books and now read them continually, but sell your Persian ones to the spice-seller.

3. Until Nágarí is thoroughly understood by you, write the Kaithi character in *kachahri.*

4. Thanks be to the counsellor, the friend of the subjects, while Ambiká prays 'May Victoria regin.'

॥ ३२ ॥

॥ भूजन पूर्वी राग ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 4 + 4 + 3 = 27 *instants.)*

मचिया बैसि गौरि जोहेलि बटिया।
कब ऐहैं तपसि हमार ॥ हो राम ॥ ॥१॥
बरद० बरिस पर एले महादेवा
भैले दुअरिया पै ठाढ़ ॥ हो राम ॥ ॥२॥
"सूतल बाडू कि जागल गौरी।
कैली हम दोसरो बियाह ॥" हो राम ॥ ॥३॥

"ना हम महादेब चोरनि ना चटनी।
नाहिं हम कोखिया बिहून।।" हो राम॥ ॥४॥
"नाहिं महादेब सेबा से चुकलीं।
काहे कैलीं दोसरो बियाह।।" हो राम॥ ॥५॥
"नाहिं ए गौरि रौरा चोरनि ना चटनी।
नाहिं रौरा कोखिया बिहून।।" हो राम॥ ॥६॥
"नाहिं ए गौरि रौरा सेवा से चुकलीं।
भाभी कैले दोसरो बियाह।।" हो राम॥ ॥७॥

1. Gaurí sits upon a stool and watches[86] for Siw, saying "When will my hermit[87] come?"
2. Mahádewá came after twelve years[88] and stood at the door.
3. "Are you sleeping or awake, O Gaurí? I have married another wife."
4. "I am not, O Mahádewá! a thief, nor gluttonous, nor am I a barren woman."
5. "Never have I failed in my devotion to you. Wherefore hast thou married another wife?"
6. "O Gaurí, thou art not a thief nor a glutton, nor art thou a barren woman."[89]
7. "Ne'er didst thou fail in thy devotion, but it was my fate that made the second marriage."

The following is a Bihárí version of the well-known nursery song '*hili mili paniyá* (*Anglo-Indice 'hilly milly punny ow'*).

॥ ३३ ॥

(Metre: 6 + 4 + 4 + 2, + 8 + 4 + 4 + 2 = 34 *instants.)*

ननदी भौजिया दुनु पनिहारिन । हो राम।
मिलि रे जूलि, सागर पनिया के चललीं। हो राम॥ ॥१॥
घुठि भर पनियां धरिलवों न० डूबे। हो राम।
कैसे रे भरौं नाजुक बँहियाँ लचकोरे। हो राम ॥ ॥२॥
घइला जे भरि भरि धरलौं अररिया। हो राम।
कवने रे रसिया रसिक दीठ लावल। हो राम। ॥ ३॥

[86] See note 59.
[87] Siw was accustomed to devote himself to most arduous penances.
[88] बरह० is oblique of बारह, 'twelve', a form which should be noted.
[89] *Lit* without (बिहून) progeny.

1. The husband's sister and her sister-in-law, both carrying water-jars on their heads, went together to fetch water from the tank.

2. The water is only up to our ankles, even the jar cannot sink in it: how am I to fill it? My delicate arms are weary.[90]

3. I filled the pots and laid them on the bank. Who is the amorous lover who casts an evil glance upon them (so as to break them)?

॥ ३४ ॥

॥ कुँवर सिंह के गीत ॥

(Metre irregular.)

बाबू बनवाँ बनवाँ खेलेला सिकरवा।
रोवेली बनवाँ के हरनियाँ ॥ ॥१॥
पहिल लड़इया बाबू हेतमपुर भैली।
रजवा बहेलिया दिहले ना ॥ ॥२॥
सतर सै सतासी भौजे कछु नाहीं बुझले।
गढ़ लुटवार दिहले ना ॥ ॥३॥

The Song of Kũar Singh

1. The Babu (Kũar Singh) is hunting in the forest, and the hinds of the forest are weeping.

2. The Babu's first battle was at Hetampur, and the Raja gave him no assistance.[91]

3. He thought not at all of his seventeen hundred and eighty-seven villages, and allowed his fortress to be plundered (by the English).

[90] *Lit.* 'elastic': hence, 'bent backwards and forwards': hence, 'weary'.

[91] *I.e.*, in the mutiny the Raja of Dumraon refused to help him. बहेली is literally 'a hunter': hence, 'a fighting-man'.